हरिभूमि
सिरसा-फतेहाबाद भूमि
रोहतक, रविवार 25 अक्टूबर 2026

11 महर्षि वाल्मीकि की शिक्षाएं सामाजिक समरसता की देती है प्रेरणा : बराला



12 दूषित पेयजल की शिकायत के बाद हरकत में आया जनस्वास्थ्य विभाग



मौसम ने ली करवट : नागपुर, अजीतनगर और मढ़ समेत कई गांवों में गिरे ओले

रतिया क्षेत्र में ओलावृष्टि से धान की फसल पर मार

किसानों को एक लाख रुपये प्रति एकड़ मुआवजा देने की मांग





रतिया। बारिश के साथ बरसते ओले। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ⏭रतिया

क्षेत्र में शनिवार देर शाम मौसम के अचानक बदले मिजाज ने किसानों की चिंता बढ़ा दी। बारिश के साथ हुई ओलावृष्टि से नागपुर, अजीतनगर और मढ़ समेत कई गांवों में खेतों में खड़ी धान की फसल को नुकसान पहुंचने की आशंका है। वहीं, मंडियों में खुले आसमान के नीचे पड़ी धान की फसल भी बारिश और ओलों की चपेट में आई। पहले से ही खरीद और उठान की समस्याओं से जूझ रहे किसानों के सामने अब मौसम की मार नई चुनौती बनकर सामने आई है। किसान नेताओं गुरु चरण सिंह और अमन निर्भय ने कहा कि क्षेत्र में धान की फसल पककर तैयार खड़ी है। ऐसे समय में ओलावृष्टि होने से फसल को नुकसान पहुंचने की आशंका बढ़ गई है। बारिश और ओलों से प्रभावित खेतों में फसल की वास्तविक स्थिति का आकलन किया जाना जरूरी है, ताकि नुकसान झेलने वाले किसानों को राहत मिल सके। उन्होंने कहा कि किसान पहले ही मंडियों में धान की खरीद और उठान में देरी की समस्याओं का सामना कर रहे हैं। अब प्राकृतिक आपदा ने उनकी परेशानी और बढ़ा दी है।

खेतो के साथ मंडियों में भी फसल को नुकसान

पगड़ी संभाल जट्टा के प्रदेश अध्यक्ष मनदीप सिंह नथवान ने प्रदेश सरकार से ओलावृष्टि प्रभावित किसानों को एक लाख रुपये प्रति एकड़ के हिसाब से मुआवजा देने की मांग की। उन्होंने कहा कि शनिवार शाम हुई ओलावृष्टि से खेतों में खड़ी धान की फसल के अलावा मंडियों में खुले में पड़ी उपज को भी नुकसान पहुंचा है। नथवान ने कहा कि सरकार को प्रभावित क्षेत्रों में नुकसान का निष्पक्ष आकलन करवाना चाहिए। इसके लिए गांव स्तर पर खेतों का निरीक्षण कर वास्तविक नुकसान का रिकॉर्ड तैयार किया जाए, ताकि प्रभावित किसानों को समय पर उचित मुआवजा मिल सके। मनदीप सिंह नथवान ने बताया कि रविवार को संगठन के प्रतिनिधि प्रभावित गांवों में जाकर किसानों से मिलेंगे और ओलावृष्टि से हुए नुकसान की जानकारी जुटाएंगे। किसानों की समस्याओं और फसल की स्थिति का जायजा लेने के बाद संगठन आगामी रणनीति तैयार करेगा। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के कृषि मौसम विज्ञान विभाग के पूर्वानुमान के अनुसार मौसम आमतौर पर खुश्क रहने की संभावना है। इसके बाद पश्चिमी विक्षोभ के आंशिक प्रभाव से 25 और 26 अक्टूबर को मौसम परिवर्तनशील हो सकता है। इस दौरान प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में हवाओं और गरज-चमक के साथ छिटपुट बूंदाबांदी या हल्की बारिश होने के आसार हैं।

गड़गड़ाहट के साथ बूंदाबांदी

फतेहाबाद। फतेहाबाद में शनिवार शाम मौसम ने करवट ली। शाम करीब 6 बजे आसमान में बादल छा गए और बादलों की गड़गड़ाहट के साथ हल्की बूंदाबांदी शुरू हो गई। मौसम विभाग ने पहले ही 25 और 26 अक्टूबर को कहीं-कहीं बूंदाबांदी या हल्की बारिश की संभावना जताई थी। शनिवार शाम मौसम में आए बदलाव से तापमान में गिरावट दर्ज की गई और वातावरण में ठंडक बढ़ गई।शाम के समय बादल छाने और बूंदाबांदी होने से लोगों को मौसम में बदलाव महसूस हुआ। पिछले दिनों की तुलना में ठंडक बढ़ने से सुबह और शाम के समय तापमान में और गिरावट आने की संभावना है। मौसम में आए इस बदलाव का असर आगामी दिनों में भी देखने को मिल सकता है।रबी फसलों के लिए अहम है मौसम में बदलावअक्टूबर के अंतिम दिनों में मौसम में बदलाव रबी सीजन की तैयारियों के लिहाज से महत्वपूर्ण है। गेहूं और सरसों की बुआई के लिए खेतों में नमी की स्थिति पर किसानों को ध्यान देना होगा। हालांकि, हल्की बूंदाबांदी से खेतों में नमी कितनी बढ़ी है, इसका आकलन स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार करना जरूरी है। किसानों को मौसम की स्थिति और खेतों में मौजूद नमी को देखते हुए ही सिंचाई व बुआई संबंधी निर्णय लेने चाहिए। रबी सीजन की प्रमुख फसलों गेहूं, सरसों और चना की बिजाई की तैयारियों के बीच अक्टूबर के अंतिम दिनों में मौसम का मिजाज बदलने के आसार हैं। 25 और 26 अक्टूबर को संभावित बूंदाबांदी किसानों की खेतों की तैयारी, मिट्टी में नमी और सिंचाई की योजना को प्रभावित कर सकती है। इस समय किसान गेहूं की बिजाई के लिए खेत तैयार कर रहे हैं, वहीं सरसों और चना सहित दूसरी रबी फसलों की बिजाई भी चल रही है। ऐसे में मौसम में होने वाला बदलाव कृषि कार्यों के लिहाज से महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

किसानों के लिए सलाह

- सिंचाई करने से पहले खेत की मिट्टी में नमी की जांच करें।
- पर्याप्त नमी होने पर अनावश्यक सिंचाई से बचें।
- गेहूं, सरसों और चना की बिजाई स्थानीय परिस्थितियों और अनुशंसित समय के अनुसार करें।
- बारिश होने पर खेत में पानी जमा न होने दें।
- बिजाई और सिंचाई से जुड़े निर्णय लेने से पहले स्थानीय मौसम पूर्वानुमान और कृषि विशेषज्ञों की सलाह पर ध्यान दें।

गेहूं की बिजाई से पहले खेत की नमी पर नजर

रबी सीजन में गेहूं फतेहाबाद जिले की प्रमुख फसलों में शामिल है। अक्टूबर के अंतिम सप्ताह से किसान गेहूं की बिजाई की तैयारियां तेज कर देते हैं, जबकि नवंबर में बिजाई का काम गति पकड़ता है। ऐसे में संभावित बारिश से पहले खेतों की नमी की स्थिति देखना जरूरी है। जिन खेतों में मिट्टी में पर्याप्त नमी मौजूद है, वहां बिना जरूरत सिंचाई करने से बचना चाहिए। वहीं, जिन खेतों में नमी कम है, वहां सिंचाई का फैसला मिट्टी की स्थिति और बिजाई के समय को ध्यान में रखकर करना चाहिए। यदि बारिश होती है तो कुछ खेतों में मिट्टी की नमी बढ़ सकती है, जिससे खेत तैयार करने में मदद मिल सकती है। हालांकि, इसका लाभ बारिश की मात्रा, मिट्टी के प्रकार और खेत की मौजूदा स्थिति पर निर्भर करेगा। किसानों को केवल मौसम पूर्वानुमान के आधार पर बिजाई टालने या जल्दबाजी में शुरू करने के बजाय खेत की वास्तविक स्थिति देखकर फैसला लेना चाहिए।

खेतों में मुछल व 1121 बासमती धान अभी हरे बालियां पूरी तरह नहीं पकीं, कटाई का इंतजार

- 3.11 लाख टन परमल की आवक, 2.28 लाख टन की खरीद 1.21 लाख टन धान का उठान बाकी

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

धान सीजन में इस बार खेतों से लेकर मंडियों तक अलग-अलग स्थिति देखने को मिल रही है। खेतों में मुछल और 1121 किस्मों की बालियां अभी हरी खड़ी हैं और पूरी तरह पकने का इंतजार है, वहीं मंडियों में पहुंच चुके धान का उठान खरीद की रफ्तार के मुकाबले पिछड़ा हुआ है। किसानों के अनुसार, परमल धान का भी बड़ा हिस्सा अभी पूरी तरह पककर कटाई के लिए तैयार नहीं हुआ है। ऐसे में फसल की कटाई में तेजी आने में अभी समय लग सकता है। दूसरी और मंडियों में पहले से खरीदे गए धान का उठान समय पर नहीं हुआ तो आने वाले दिनों में नई फसल की आवक बढ़ने के साथ जगह की कमी का दबाव बढ़ सकता है। 23 अक्टूबर तक जिले में 3.11 लाख मीट्रिक टन धान की आवक हो चुकी है, जबकि खरीदे गए धान में से 1.21 लाख मीट्रिक टन उठान के इंतजार में है। सरकार ने किसानों को 259.55 करोड़ रुपये का भुगतान उनके खाते में कर दिया है।

हैफेड ने खरीदा सबसे ज्यादा धान

23 अक्टूबर तक एजेंसीवार खरीद के आंकड़ों में हैफेड सबसे आगे रहा। हैफेड ने 91,095 मीट्रिक टन धान खरीदा है। खाद्य एवं आपूर्ति विभाग ने 83,623 मीट्रिक टन और हरियाणा वेयरहाउसिंग कॉरपोरेशन ने 54,222 मीट्रिक टन धान की खरीद की है।



फतेहाबाद। अनाजमंडी में पड़ी धान की ढ़ेरियां।

खेतों में फसल पकने का इंतजार

जिले में धान की आवक और खरीद की स्थिति पर फसल पकने का असर दिखाई दे रहा है। किसानों के मुताबिक, मुछल और 1121 किस्मों की बालियां अभी पूरी तरह नहीं पकी हैं। खेतों में फसल हरी होने के कारण किसान कटाई में जल्दबाजी नहीं करना चाहते। फसल पूरी तरह तैयार होने के बाद ही कटाई करने से गुणवत्ता बनाए रखने और अधपकी फसल के नुकसान से बचने में मदद मिती है। परमल धान की फसल का भी बड़ा हिस्सा अभी पकने की प्रक्रिया में बताया जा रहा है। ऐसे में अगले दिनों में मंडियों में आवक बढ़ने की संभावना फसल के पकने और कटाई की गति पर निर्भर करेगी। यदि बड़ी मात्रा में धान मंडियों में पहुंचता है तो खरीद के साथ-साथ उठान की व्यवस्था भी महत्वपूर्ण हो जाएगी। पहले से खरीदे गए धान का उठान लंबित रहने पर नई फसल के लिए जगह उपलब्ध कराना चुनौती बन सकता है।

पिछले सीजन की खरीद का केवल 20 प्रतिशत

पिछले खरीफ सीजन 2025-26 में फतेहाबाद जिले में कुल 11,02,617 मीट्रिक टन धान की खरीद हुई थी। मौजूदा सीजन में 23 अक्टूबर तक 2,28,939 मीट्रिक टन खरीद हुई है। यह पिछले पूरे सीजन की कुल खरीद का करीब 20.77 प्रतिशत है। हालांकि, दोनों सीजन की तुलना करते समय यह ध्यान रखना जरूरी है कि मौजूदा खरीद सीजन अभी जारी है। खेतों में खड़ी फसल की कटाई तेज होने के साथ मंडियों में आवक और खरीद दोनों बढ़ सकती हैं। फिलहाल जिले में धान खरीद की आगे की स्थिति फसल के पकने, कटाई की रफ्तार और मंडियों से उठान की व्यवस्था पर निर्भर करेगी।

कुल आवक का 73.45 प्रतिशत धान खरीदा

23 अक्टूबर की रिपोर्ट के अनुसार, जिले की मंडियों में अब तक कुल 3,11,708 मीट्रिक टन धान पहुंच चुका है। इसमें से 2,28,939 मीट्रिक टन धान की खरीद हुई है। इस तरह कुल आवक के मुकाबले खरीद का अनुपात 73.45 प्रतिशत है। वहीं, आवक के मुकाबले 82,769 मीट्रिक टन धान की खरीद दर्ज होना बाकी है, जो कुल आवक का 26.55 प्रतिशत है। एक दिन पहले, 22 अक्टूबर तक जिले में 2,00,004 मीट्रिक टन धान खरीदा गया था। 23 अक्टूबर तक खरीद बढ़कर 2,28,939 मीट्रिक टन पहुंच गई। यानी एक दिन में 28,935 मीट्रिक टन धान की खरीद दर्ज की गई। यह दर्शाता है कि मंडियों में खरीद की गतिविधियां जारी हैं, लेकिन खरीदे गए धान को समय पर बाहर निकालना भी जरूरी है।

खरीदे धान में से 52.94 प्रतिशत का उठान बाकी

उठान की स्थिति खरीद के मुकाबले कमजोर बनी हुई है। रिपोर्ट के अनुसार, अब तक 1,07,750 मीट्रिक टन धान मंडियों से उठाया गया है। यह कुल खरीद का 47.06 प्रतिशत है। इसके विपरीत, 1,21,189 मीट्रिक टन धान अभी उठान के इंतजार में है। यानी खरीदे गए धान का 52.94 प्रतिशत हिस्सा मंडियों से बाहर जाना बाकी है। खरीद और उठान के बीच यह अंतर आने वाले दिनों में महत्वपूर्ण हो सकता है। यदि उठान में तेजी नहीं आई और खेतों में खड़ी फसल पकने के बाद आवक बढ़ गई तो मंडियों में धान रखने की जगह पर दबाव बढ़ सकता है। इसका असर किसानों के फसल उतारने, खरीद प्रक्रिया और मंडियों में वाहनों की आवाजाही पर भी पड़ सकता है। इसलिए खरीद एजेंसियों के लिए लंबित धान का उठान तेज करना जरूरी होगा।

खबर संक्षेप

60 बोतल हथकढ़ी अवैध शराब बरामद

सिरसा। सीआईए ऐलनाबाद पुलिस ने रानियां थाना क्षेत्र के गांव कुत्ताबढ़ में कार्रवाई करते हुए 60 बोतल हथकड़ नाजायज शराब बरामद की है। पुलिस ने इस मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ मामला दर्ज किया है। सीआईए ऐलनाबाद प्रभारी के अनुसार पुलिस टीम रानियां क्षेत्र में गश्त पर थी। इसी दौरान टीम को सूचना मिली कि गांव कुत्ताबढ़ निवासी जग्गा सिंह अपने घर पर हथकड़ शराब निकालकर अवैध रूप से बेचने का काम करता है। सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने आरोपी के घर पर दबिश दी और तलाशी ली। तलाशी के दौरान घर के साथ खाली प्लाट से 60 बोतल हथकड़ नाजायज शराब बरामद हुई। पुलिस ने आरोपी जग्गा सिंह निवासी गांव कुत्ताबढ़, जिला सिरसा को काबू कर लिया।

नगर पालिकाओं में फाइनेंस सब-कमेटी संभालेगी जिम्मेदारी

- 23 जनवरी 2024 का आदेश वापस, नई व्यवस्था से विकास कार्यों और टेंडर प्रक्रिया में बदलेगी कमेटी की भूमिका

दलबीर जाखल ⏭भूना

शहरी स्थानीय निकाय विभाग ने प्रदेश की सभी नगर परिषदों और नगर पालिकाओं में वित्तीय व्यवस्था को लेकर बड़ा बदलाव किया है। सरकार ने फाइनेंस एंड कांट्रेक्ट कमेटी के गठन संबंधी 23 जनवरी 2024 को जारी आदेश को तत्काल प्रभाव से वापस ले लिया है। अब इसकी जगह फाइनेंस सब-कमेटी काम करेगी। विभाग के आयुक्त एवं सचिव अशोक कुमार मीणा की ओर से जारी नए आदेश में कहा गया है कि हरियाणा म्युनिसिपल बिजनेस बाय-लॉज 1981 के क्लॉज 17 के तहत फाइनेंस सब-कमेटी का गठन और संचालन किया जाएगा। कमेटी के चुनाव, कार्यकाल, सदस्यों की नियुक्ति, सचिव की भूमिका, सदस्यों को हटाने, आकस्मिक रिक्तियां भरने, बैठकों, कोरम और मतदान सहित अन्य प्रक्रियाएं निर्धारित नियमों के अनुसार पूरी होंगी।

पहले वाली वित्तीय शक्तियां रहेंगी बरकरार

आदेश में स्पष्ट किया गया है कि फाइनेंस सब-कमेटी को वही वित्तीय और प्रशासनिक शक्तियां प्राप्त होंगी, जो 11 जुलाई 2025 की अधिसूचना के तहत फाइनेंस एंड कांट्रेक्ट कमेटियों को दी गई थीं। यानी कमेटी के स्वरूप में बदलाव किया गया है, जबकि उसे मिलने वाली शक्तियां पूर्व अधिसूचना के अनुरूप रहेंगी। विभाग ने आदेश की प्रतियां सभी उपायुक्तों, जिला नगर आयुक्तों, नगर निगम आयुक्तों तथा संबंधित नगर परिषदों और नगर पालिकाओं के अधिकारियों व निर्वाचित प्रतिनिधियों को भेज दी हैं। इस बदलाव का असर भूना नगर पालिका सहित प्रदेश की सभी नगर पालिकाओं के कामकाज पर भी पड़ेगा। विकास कार्यों, वित्तीय मंजूरी और टेंडर प्रक्रिया से जुड़े मामलों में अब फाइनेंस सब-कमेटी की भूमिका महत्वपूर्ण रहेगी। नई व्यवस्था के तहत स्थानीय निकायों का कामकाज निर्धारित नियमों के अनुसार संचालित किया जाएगा।

कैंपर में पानी भरने गया व्यक्ति नहर में गिरा, तलाश जारी



रतिया। गांव निक्कुआना के पास देर रात्रि भाखड़ा नहर से पीने के पानी का कैंपर भरने गए एक व्यक्ति का पांव फिसल गया और वह भाखड़ा में जा गिरा। सूचना मिलने पर रतिया सदर थाना अध्यक्ष शीशपाल सिंह के नेतृत्व में पुलिस टीम मौके पर पहुंच गई और व्यक्ति की खोजबीन के लिए एचडीआरएफ की टीम को सूचना दी देर रात्रि ही टीम के कई सदस्य मौके पर पहुंच गए और गोताखोरों की सहायता से व्यक्ति की तलाश शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार गांव निक्कुआना निवासी 45 वर्षीय जसवीर सिंह जो कि गांव में ही टेलर की दुकान करता है देर रात्रि अपनी दुकान से पीने के पानी का कैंपर भरने के लिए भाखड़ा नहर के किनारे गया था। इस दौरान अचानक जसवीर सिंह का पांव फिसल गया और वह भाखड़ा नहर में जा गिरा। आसपास के लोगों ने जैसे ही जसवीर सिंह को नहर में गिरते देखा तो उन्होंने तुरंत शोर मचा दिया और इसकी सूचना भी पुलिस को दे दी और सूचना मिलते ही सदर थाना अध्यक्ष शीशपाल सिंह अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंच गए। मामले की गंभीरता को देखते हुए उन्होंने तुरंत उच्च अधिकारियों के साथ-साथ एचडीआरएफ की टीम को भी सूचना दे दी। देर रात्रि ही एचडीआरएफ की टीम भी मौके पर पहुंच गई और व्यक्ति की खोजबीन भी शुरू कर दी है। सदर थाना प्रभारी शीशपाल सिंह ने बताया कि लापता जसवीर सिंह की खोजबीन की जा रही है। उन्होंने बताया कि परिजनों के बयानों के आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

शराब के नशे में ट्राला दुकान में घुसाया

- गोलगप्पे बेच रहा युवक गंभीर रूप ये घायल

हरिभूमि न्यूज ⏭भूना

शहर के शहीद उधम सिंह चौक के नजदीक शुक्रवार रात करीब 10 बजे तेज रफ्तार ट्रक-ट्राला बेकाबू होकर दुकान में जा घुसा। इससे पहले ट्राले ने दुकान के बाहर खड़ी रेहड़ी को टक्कर मार दी। हादसे में रेहड़ी पर गोलगप्पे बेच रहे राजेश कुमार गंभीर रूप से घायल हो गए, जबकि दुकानदार रजत निवासी बोस्ती बाल-बाल बच गया। हादसे के बाद ट्राला निकासी नाले में फंस गया।

जानकारी के अनुसार, राजस्थान के बीकानेर जिले के गांव धिकताना निवासी चालक बलवंत राम पुत्र शंकर लाल ट्रक-ट्राला लेकर भूना से बीकानेर की ओर जा रहा था। आरोप है कि चालक ने शराब का सेवन कर रखा था। शहीद उधम सिंह चौक के पास पहुंचते ही ट्राला अनियंत्रित हो गया और राधे-राधे नमकीन भंडार की दुकान में जा घुसा। इस दौरान दुकान के बाहर रेहड़ी पर काम कर रहे राजेश कुमार को गंभीर चोटें आईं।



भूना। तेज रफ्तार ट्रक-ट्राला बेकाबू होकर दुकान में घुसा हुआ। फोटो : हरिभूमि

चालक गिरफ्तार, ट्राला कब्जे में लिया

हादसे के तुरंत बाद दुकानदार रजत बोस्ती ने घायल राजेश कुमार को सामने स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती करवाया। प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने उसकी गंभीर हालत को देखते हुए अग्रोहा मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया। उधर, मौके पर मौजूद लोगों ने ट्राला चालक को पकड़ लिया और पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल का जायजा लेकर कार्रवाई शुरू कर दी। थाना प्रभारी कंवर सिंह ने बताया कि ट्राला कब्जे में ले लिया गया है और चालक को गिरफ्तार कर लिया गया है। उनके अनुसार, चालक मौके पर शराब के नशे में पाया गया। उसके खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जा रही है।

धांगड़ की धर्मशाला में जुआ खेलते 7 लोग काबू

फतेहाबाद। गांव धांगड़ की धर्मशाला में रुपये दांव पर लगाकर जुआ खेल रहे सात लोगों को थाना सदर फतेहाबाद पुलिस ने काबू किया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से 26,080 रुपये की नकदी और ताश के पत्ते बरामद किए हैं। पुलिस ने सातों आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर आगामी कार्रवाई शुरू की। थाना सदर प्रभारी उपनिरीक्षक सुमित ने बताया कि 23 अक्टूबर को पुलिस टीम गांव धांगड़ के बस अड्डे पर गश्त कर रही थी। इसी दौरान पुलिस को गुप्त सूचना मिली कि गांव की धर्मशाला में कुछ लोग रुपये दांव पर लगाकर जुआ खेल रहे हैं। सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने धर्मशाला में छापेमारी की और मौके से सात व्यक्तियों को काबू कर लिया।

शरद पूर्णिमा आज, चांदनी रात में रखी खीर का बंटेगा प्रसाद

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

शरद पूर्णिमा का व्रत आज रविवार को किया जाएगा। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, शरद पूर्णिमा के दिन चंद्रमा की रोशनी में खीर रखने की परंपरा है। हिंदू धर्म में शरद पूर्णिमा का विशेष महत्व है। मान्यताओं के अनुसार, शरद पूर्णिमा की रात को अधिक पुण्यदायी माना गया है। ऐसा कहा जाता है कि शरद पूर्णिमा की रात चंद्रमा अपनी सोलह कलाओं से परिपूर्ण रहते हैं। इस दिन खुले आसमान में खीर रखने का विशेष महत्व बताया गया है। श्री श्याम मंदिर के पुजारी सोनू शर्मा ने बताया कि शरद पूर्णिमा की रात चंद्रमा की रोशनी में खीर रखने की परंपरा तो सदियों से चली आ रही है।

खुले आसमान में खीर रखने का है विशेष महत्व

क्या खीर रखने के पीछे वैज्ञानिक कारण भी

चंद्रमा की रोशनी सूर्य के प्रकाश का परिवर्तन है। चांदनी में खीर रखने में उसमें किसी विशेष औषधीय गुण या अमृत के समा जाने का ठोस वैज्ञानिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है। खीर को ठंडी रात में रखकर तापमान कम हो जाता है। दूध से बनी खीर को रातभर खुले में छोडना स्वास्थ्य की दृष्टि से जोखिमपूर्ण हो सकता है, क्योंकि उसमें धूल, कीड़े और सूक्ष्मजीव पहुंच सकते हैं। इसलिए थोड़ा स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखें और खीर को किसी हल्के कपड़े और ऊपर से छन्नी को ढक दें ताकी उसमें धूल या कुछ और चीज उसमें गिर न जाएं।

अभियान नशा तस्करों के खिलाफ सख्त कार्रवाई रहेगी जारी : दीपक सहारन

पुलिस ने की एक साल में 23 करोड़ के नशे की खेप जब्त, 1013 तस्कर सलाखो के पीछे भेजे

- 13 इनामी बदमाशों सहित 220 भगोड़ों को भी किया गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ⏭सिरसा

सिरसा में नशा तस्करों और अपराधियों के खिलाफ पुलिस की मुहिम लगातार रंग ला रही है। पुलिस अधीक्षक दीपक सहारन के नेतृत्व में पिछले एक साल के दौरान जिला पुलिस ने नशा तस्करों, अवैध हथियार रखने वालों, शराब तस्करों और जुआरियों पर शिकंजा कसते हुए बड़ी कार्रवाई की है। एसपी दीपक सहारन ने 24 अक्टूबर 2025 को कार्यभार संभाला था। इसके बाद से पुलिस ने करीब 23 करोड़ रुपये के मादक पदार्थ बरामद कर 1013 नशा तस्करों को गिरफ्तार किया है। वहीं, 13 इनामी बदमाशों सहित 220 भगोड़ों को भी गिरफ्तार किया गया है। पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार नशा तस्करी के खिलाफ कार्रवाई करते हुए 526 मामले दर्ज किए गए। इस दौरान 6 किलो 797 ग्राम हेरोइन, 113 किलो 542 ग्राम अफीम, 1120 किलो 837 ग्राम डोडा चूरा पोस्त और 55 किलो 440 ग्राम गांजा बरामद किया गया। मेडिकल नशे के कारोबार पर चोट करते हुए करीब दो करोड़ रुपये मूल्य की 8.40 लाख नशीली गोलियां और कैप्सूल भी बरामद किए गए।



एसपी दीपक सहारन।

चलती रहेगी कार्रवाई

एसपी दीपक सहारन ने कहा कि नशा तस्करों के खिलाफ ऐसी सख्त कार्रवाई की जाएगी कि उनकी आने वाली पीढ़ियां भी सिरसा पुलिस की कार्रवाई को याद रखेंगी। साथ ही नशे के शिकार लोगों का उपचार कर उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के प्रयास भी लगातार जारी हैं।

आठ आपराधिक गैंगों का पर्दाफाश कर 13 इनामी बदमाशों सहित 220 भगोड़ों को भी गिरफ्तार किया गया है। पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार नशा तस्करी के खिलाफ कार्रवाई करते हुए 526 मामले दर्ज किए गए। इस दौरान

आठ आपराधिक गैंगों का भी किया पर्दाफाश

एसपी के अनुसार आठ आपराधिक गैंगों का पर्दाफाश कर 29 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। कार्रवाई के दौरान आरोपियों की करीब दो करोड़ रुपये की चल-अचल संपत्ति भी बरामद की गई। एसपी दीपक सहारन ने दो टूक कहा कि सिरसा से नशा खत्म होने तक नशा तस्करों के खिलाफ जंग जारी रहेगी। नशा बेचने वालों को किसी भी सूरत में जिले में पैर नहीं पसारने दिए जाएंगे। उन्होंने आमजन से अपील की कि नशा तस्करों और गैरकानूनी गतिविधियों में शामिल लोगों की सूचना पुलिस को दें। सूचना देने वाले की पहचान गुप्त रखी जाएगी। उन्होंने युवाओं से नशे से दूर रहकर शिक्षा और खेलों में आगे बढ़ने का आह्वान किया। साथ ही नशे की गिरफ्त में आए लोगों का उपचार करवाकर उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने पर भी जोर दिया।

फिजिकल गोल्ड, ईटीएफ और म्यूचुअल फंड के फायदे और सीमाएं

सोने में निवेश का सही रास्ता चुनें चमक ही नहीं लागत को भी देखें

खरीद-बिक्री का खर्च, सुरक्षा, निवेश की सुविधा और लागत तय करेंगे वास्तविक मुनाफा

बदलते निवेश विकल्पों ने सोने में पैसा लगाने के कई रास्ते खोले, केवल सोने के भाव बढ़ने की संभावना देखकर निवेश करना पर्याप्त नहीं, क्षमता को जानें

बिजनेस डेस्क

सोना भारतीय परिवारों के लिए केवल आभूषण या परंपरा का प्रतीक नहीं, बल्कि मुश्किल वक्त का भरोसेमंद सहारा भी रहा है। महंगाई, आर्थिक अनिश्चितता और शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव के बीच निवेशक अपने पोर्टफोलियो में सोने को जगह देना पसंद करते हैं। हालांकि, अब सोने में निवेश का मतलब केवल गहने या सिक्के खरीदकर तिजोरी में रखना नहीं रह गया है। बदलते निवेश विकल्पों ने सोने में पैसा लगाने के कई रास्ते खोल दिए हैं। कोई फिजिकल गोल्ड खरीदता है, तो कोई गोल्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) या गोल्ड म्यूचुअल फंड के जरिए निवेश करता है। तीनों विकल्पों का उद्देश्य सोने की कीमत में होने वाली बढ़ोतरी से लाभ उठाना हो सकता है, लेकिन इनकी लागत, खरीदने-बेचने की प्रक्रिया, सुरक्षा और निवेश की सुविधा अलग-अलग है। इसलिए केवल सोने के भाव बढ़ने की संभावना देखकर निवेश करना पर्याप्त नहीं है। यह समझना भी जरूरी है कि कौन-सा विकल्प आपकी जरूरत, निवेश अवधि और जोखिम उठाने की क्षमता के अनुकूल है।



फिजिकल गोल्ड

फिजिकल गोल्ड में निवेश का सबसे पारंपरिक तरीका सोने के सिक्के, छड़ या आभूषण खरीदना है। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि निवेशक के पास सोना वास्तविक रूप में मौजूद रहता है। जरूरत पड़ने पर इसका इस्तेमाल उपहार देने, पारिवारिक आयोजनों या अन्य व्यक्तिगत जरूरतों के लिए भी किया जा सकता है। हालांकि, निवेश के नजरिये से आभूषण और सोने के सिक्के एक जैसे नहीं हैं। गहने खरीदते समय मेकिंग चार्ज और लागू वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) का खर्च जुड़ता है। दोबारा बेचने पर मेकिंग चार्ज सामान्यतः वापस नहीं मिलता। शुद्धता की जांच, दुकानदार की खरीद नीति और खरीद-बिक्री के भाव में अंतर के कारण भी वास्तविक मुनाफा घट सकता है। सिक्कों और छड़ों में आमतौर पर आभूषणों की तुलना में मेकिंग चार्ज कम होता है, फिर भी खरीद मूल्य और बिक्री मूल्य का अंतर ध्यान में रखना चाहिए। इसके अलावा, घर में सोना रखने पर चोरी या गुम होने का जोखिम रहता है। बैंक लॉकर में रखने पर अतिरिक्त खर्च हो सकता है। इसलिए जो लोग केवल निवेश के लिए सोना खरीदना चाहते हैं, उन्हें आभूषणों के बजाय कम अतिरिक्त लागत वाले विकल्पों पर विचार करना चाहिए।

गोल्ड ईटीएफ

गोल्ड ईटीएफ ऐसे निवेश फंड हैं, जिनकी इकाइयां शेयर बाजार में खरीदी और बेची जाती हैं। ये आमतौर पर भौतिक सोने में निवेश करते हैं और सोने की कीमत में होने वाले बदलाव के अनुरूप रिटर्न देने का लक्ष्य रखते हैं। इस तरह निवेशक को घर में सोना रखने, उसकी सुरक्षा करने या शुद्धता की जांच कराने की चिंता नहीं करनी पड़ती। गोल्ड ईटीएफ में निवेश के लिए सामान्यतः डीमैट और ट्रेडिंग खाते की जरूरत होती है। निवेशक बाजार खुलने के दौरान प्रचलित भाव पर यूनिट खरीद या बेच सकता है। हालांकि, वास्तविक लेनदेन मूल्य बाजार में मांग-आपूर्ति, खरीद-बिक्री के अंतर और फंड की शुद्ध परिसंपत्ति कीमत से प्रभावित हो सकता है। इस विकल्प में फंड का प्रबंधन खर्च, ब्रोकरेज और अन्य लागू शुल्क रिटर्न को प्रभावित कर सकते हैं। निवेश से पहले एक्सपेंस रेशियो, कारोबार की मात्रा और खरीद-बिक्री के भाव में अंतर की तुलना करनी चाहिए। केवल किसी ईटीएफ की एक यूनिट का भाव कम होने से यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि वह दूसरे फंड से सस्ता है। अलग-अलग फंड की एक यूनिट के पीछे सोने की मात्रा अलग हो सकती है।

गोल्ड म्यूचुअल फंड

जिन निवेशकों के पास डीमैट खाता नहीं है या जो हर महीने नियमित रकम निवेश करना चाहते हैं, उनके लिए गोल्ड म्यूचुअल फंड सुविधाजनक विकल्प हो सकते हैं। ऐसे फंड आमतौर पर गोल्ड ईटीएफ की इकाइयों में निवेश करते हैं। निवेशक इनमें एकमुश्त रकम लगा सकता है या अपनी क्षमता के अनुसार व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी) के जरिए नियमित निवेश कर सकता है। इन फंडों में निवेश के लिए सामान्यतः डीमैट खाते की आवश्यकता नहीं होती। निवेशक संबंधित म्यूचुअल फंड की प्रक्रिया के अनुसार सीधे निवेश कर सकता है।

तीनों विकल्पों में कैसे करें तुलना?

- **कुल लागत:** फिजिकल गोल्ड में मेकिंग चार्ज, जीएसटी और खरीद-बिक्री का अंतर देखें। ईटीएफ व म्यूचुअल फंड में कुल खर्च की तुलना करें।
- **निवेश की सुविधा:** नियमित मासिक निवेश के लिए गोल्ड म्यूचुअल फंड सुविधाजनक हो सकता है, जबकि बाजार में खुद यूनिट खरीदने-बेचने के लिए ईटीएफ उपयोगी है।
- **सुरक्षा:** फिजिकल गोल्ड की सुरक्षा निवेशक की जिम्मेदारी है। डिजिटल निवेश विकल्पों में भौतिक भंडारण की चिंता नहीं होती, लेकिन बाजार और फंड से जुड़े जोखिम बने रहते हैं।
- **निकासी:** निवेश से पैसा निकालने की प्रक्रिया और उसमें लगने वाले समय को समझें। ईटीएफ की बिक्री बाजार के कारोबार पर निर्भर करती है, जबकि म्यूचुअल फंड में लागू निकासी नियम महत्वपूर्ण हैं।
- **कराधान:** कर नियम निवेश के प्रकार, खरीद की तारीख और लागू कानूनों के अनुसार अलग हो सकते हैं। इसलिए पुराने नियमों के आधार पर अनुमान लगाने के बजाय निवेश के समय मौजूदा कर प्रावधानों की पुष्टि करें।

पोर्टफोलियो में संतुलन जरूरी

सोने में निवेश का उद्देश्य केवल अधिकतम मुनाफा कमाना नहीं, बल्कि निवेश पोर्टफोलियो में विविधता लाना भी हो सकता है। हालांकि, सोने की कीमतें भी घटती-बढ़ती हैं और कोई भी विकल्प निश्चित रिटर्न की गारंटी नहीं देता। गोल्ड ईटीएफ और गोल्ड म्यूचुअल फंड में निवेश करने से सोने की कीमतों से जुड़ा जोखिम समाप्त नहीं होता। निवेशकों को अपनी पूरी बचत सोने में लगाने के बजाय उसे अन्य निवेश साधनों के साथ संतुलित रखने पर विचार करना चाहिए। आपातकालीन जरूरतों के लिए पर्याप्त नकदी और अपने वित्तीय लक्ष्यों के अनुरूप निवेश योजना भी जरूरी है।

14 साल में 5 करोड़ जोड़ना लक्ष्य तो निवेश की रणनीति में करें बदलाव

बिजनेस डेस्क

नौकरी शुरू करने के बाद हर व्यक्ति चाहता है कि एक समय ऐसा आए, जब उसे रोजी-रोटी के लिए काम करने की मजबूरी न रहे। आर्थिक स्वतंत्रता का यही सपना युवाओं को जल्दी निवेश शुरू करने के लिए प्रेरित करता है, लेकिन यदि कोई 28 वर्ष की उम्र में 70 हजार रुपये मासिक वेतन पाता हो और 42 वर्ष की उम्र में नौकरी छोड़कर रिटायर होना चाहता हो, तो उसके सामने चुनौती बड़ी है।

खासकर तब, जब उसका लक्ष्य 5 करोड़ रुपये फंड तैयार करना हो। इसी सवाल को समझने के लिए एक वित्तीय प्रयोग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित चैटजीपीटी से निवेश योजना तैयार कराई गई। इसमें 25 हजार की मासिक व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी), हर साल निवेश में 10% बढ़ोतरी और निवेश पर सालाना 15% प्रभावी प्रतिफल की धारणा रखी गई। अनुमान के मुताबिक, 14 साल तक नियमित निवेश करने के बाद भी 42 वर्ष की उम्र में करीब 2.10 करोड़ ही जुट पाएंगे। यानी 5 करोड़ के लक्ष्य से लगभग 2.90 करोड़ रुपये कम रह जाएंगे।



25 हजार की एसआईपी और हर साल 10% निवेश बढ़ाने पर 42 साल की उम्र तक जुटेंगे 2.10 करोड़

70000 की आय में कितनी गुंजाइश

निवेश योजना बनाने से पहले आय और खर्च का हिसाब समझना जरूरी है। इस उदाहरण में निवेशक नोएडा में रहता है और उसकी मासिक आय 70 हजार रुपये है। इसमें से 14 हजार मकान के किराये पर खर्च होते हैं। राशन और घरेलू जरूरतों पर 5 हजार, बिजली-पानी पर 2 हजार, इंटरनेट और मोबाइल पर 1,500 तथा परिवहन पर 2 हजार खर्च होते हैं। बाहर खाने और अन्य मनोरंजन पर 5 हजार, व्यक्तिगत खरीदारी पर 3 हजार, बीमा और चिकित्सा पर 2,500 तथा परिवार की मदद और दूसरे विविध खर्चों पर 10 हजार खर्च होते हैं। इस तरह कुल मासिक खर्च 45 हजार बैठता है और निवेश के लिए 25 हजार बचते हैं। यानी निवेशक अपनी आय का लगभग 35.7% निवेश कर सकता है। पूरी बची रकम एसआईपी में लगाने से पहले आपातकालीन जरूरतों, अनियमित खर्चों व पर्याप्त बीमा की व्यवस्था करना जरूरी है।

हर वर्ष बढ़ेगी एसआईपी फिर लक्ष्य अधूरा

योजना में माना गया कि निवेशक की सैलरी हर साल 10% बढ़ेगी और वह अपनी एसआईपी में भी उतनी ही बढ़ोतरी करेगा। शुरुआत में 25 हजार की मासिक एसआईपी से सालाना 3 लाख निवेश होंगे। दूसरे वर्ष मासिक निवेश बढ़कर 27,500 और तीसरे वर्ष 30,250 हो जाएगा। पांचवें वर्ष तक मासिक एसआईपी करीब 36,603 पहुंचने का अनुमान है। दसवें वर्ष में यह लगभग 58,949 और चौदहवें वर्ष में करीब 86,307 हो जाएगी। इस गणना के अनुसार, 14 वर्षों में निवेशक अपनी जेब से कुल लगभग 83.92 लाख लगाएगा। यदि निवेश पर 15% प्रभावी सालाना प्रतिफल मिलता है, तो कुल निवेश का मूल्य करीब 2.10 करोड़ हो सकता है। इसमें लगभग 1.26 करोड़ संभावित निवेश वृद्धि से आएंगे।

5 करोड़ जुटाने में लगेंगे 19 साल

यदि निवेशक इसी योजना पर चलता रहे, एसआईपी हर साल 10% बढ़ाता रहे और 15% प्रभावी सालाना प्रतिफल मिलता रहे, तो 5 करोड़ का लक्ष्य लगभग 18 साल 10 महीने में हासिल होने का अनुमान है। यानी 28 वर्ष की उम्र में निवेश शुरू करने वाला व्यक्ति करीब 47 वर्ष की उम्र में इस लक्ष्य तक पहुंच सकता है। यह उसकी निर्धारित रिटायरमेंट उम्र से लगभग पांच साल बाद है। इससे स्पष्ट है कि केवल नियमित एसआईपी और वेतन के साथ बढ़ते निवेश पर निर्भर रहकर 42 वर्ष में 5 करोड़ जुटाना इस योजना के तहत संभव नहीं दिखता। लक्ष्य हासिल करने के लिए निवेश की रकम बढ़ानी होगी, मौजूदा बचत का सहारा लेना होगा, अतिरिक्त आय के स्रोत तलाशने होंगे या रिटायरमेंट की समयसीमा में बदलाव करना होगा।

लक्ष्य पाने के लिए क्या बदलना होगा

सबसे पहले, वेतन बढ़ने के साथ निवेश की रकम भी बढ़ाने पर ध्यान देना चाहिए। यदि हर साल वेतन में 10% की वृद्धि होती है, तो खर्च भी उसी अनुपात में बढ़ाना जरूरी नहीं है। वेतन वृद्धि का एक अतिरिक्त हिस्सा निवेश में लगाने से लंबी अवधि में बड़ा अंतर आ सकता है। बोनस या दूसरी अतिरिक्त आय का कुछ हिस्सा भी वित्तीय लक्ष्यों के लिए रखा जा सकता है। दूसरा, निवेश में विविधता बनाए रखना जरूरी है। लंबी अवधि में इक्विटी म्यूचुअल फंड पूंजी बढ़ाने की संभावना दे सकते हैं, लेकिन इनमें बाजार का जोखिम भी रहता है। ऋण आधारित निवेश और दूसरे साधनों का चयन निवेशक की जोखिम क्षमता, निवेश अवधि और जरूरतों के अनुरूप होना चाहिए। केवल जल्दी लक्ष्य हासिल करने के लिए अत्यधिक जोखिम लेना समझदारी नहीं है। तीसरा, महंगाई को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

आज के 5 करोड़ और 14 साल बाद के 5 करोड़ की क्रय शक्ति समान नहीं होगी। इसलिए रिटायरमेंट के समय के खर्च, स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों और भविष्य की महंगाई को ध्यान में रखकर लक्ष्य तय करना चाहिए। कर, निवेश शुल्क और रिटायरमेंट के बाद नियमित निकासी का असर भी गणना में शामिल होना चाहिए।

रिटायरमेंट का लक्ष्य बड़ी रकम नहीं

जल्दी रिटायर होने का अर्थ केवल निवेश खाते में बड़ी रकम जमा करना नहीं है। यह भी तय करना होगा कि रिटायरमेंट के बाद हर महीने कितना खर्च होगा, जमा पूंजी कितने वर्षों तक चलनी चाहिए और आपातकालीन जरूरतों के लिए कितनी रकम अलग रखनी होगी। यदि रिटायरमेंट के बाद कोई नियमित आय नहीं होगी, तो निवेश से निकासी की योजना और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।



स्मॉलकैप फंड में 25% तक रिटर्न, लेकिन निवेश से पहले जोखिम समझना भी जरूरी

बचत मंत्र

बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में तेजी के दौरान स्मॉलकैप म्यूचुअल फंड निवेशकों को आकर्षित करते हैं। छोटी कंपनियों में कारोबार बढ़ाने और तेजी से आगे निकलने की क्षमता होती है, इसलिए इनमें निवेश करने वाले फंड लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न देने की संभावना रखते हैं। लेकिन यही निवेश बाजार में गिरावट आने पर बड़ा नुकसान भी करा सकता है। वर्ष 2025 की जनवरी-मार्च तिमाही में प्रमुख स्मॉलकैप फंडों को करीब 13 से 14 प्रतिशत तक नुकसान हुआ। वर्ष 2026 की पहली तिमाही में भी इस श्रेणी के फंडों में लगभग 12 से 13 प्रतिशत की गिरावट आई। इसके बाद अप्रैल-जून 2026 में स्मॉलकैप फंडों में करीब 23 प्रतिशत की तेजी देखने को मिली। यह उतार-चढ़ाव बताता है कि इस श्रेणी में रिटर्न की संभावना के साथ जोखिम भी काफी अधिक है। इक्विटीमास्टर की 20 अक्टूबर 2026 को प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, पांच साल के औसत रोलिंग रिटर्न के आधार पर क्वांट स्मॉलकैप, बंधन स्मॉलकैप, इनवेस्को इंडिया स्मॉलकैप, निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप और बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप प्रमुख फंडों में शामिल हैं। इनका औसत पांच साल का रोलिंग रिटर्न करीब 22.5 से 25 प्रतिशत के बीच रहा है।

क्वांट स्मॉलकैप फंड

पांच साल के औसत रोलिंग रिटर्न में क्वांट स्मॉलकैप फंड करीब 25.04 प्रतिशत के साथ पहले स्थान पर है। रिपोर्ट के मुताबिक, इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न लगभग 17.84 प्रतिशत है। फंड के प्रमुख निवेश में एचएफसीएल, आरबीएल बैंक, अडाणी एंटरप्राइजेज, अडाणी पावर और एजिस लॉजिस्टिक्स शामिल हैं। रिपोर्ट के अनुसार, इसकी तीन साल की वार्षिकीकृत अस्थिरता 18.2 प्रतिशत रही।

बंधन स्मॉलकैप फंड

बंधन स्मॉलकैप फंड लगभग 24.4 प्रतिशत के औसत पांच साल के रोलिंग रिटर्न के साथ दूसरे स्थान पर है। रिपोर्ट में इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न करीब 19 प्रतिशत बताया गया है। इसकी खासियत बेहतर जोखिम-समायोजित प्रदर्शन है। रिपोर्ट के अनुसार, प्रमुख फंडों में इसका शार्प और सॉर्टिनो अनुपात बेहतर रहा है। ये अनुपात बताते हैं कि किसी फंड ने कितना जोखिम उठाकर कितना रिटर्न दिया। इस फंड का आकार तेजी से बढ़ा है। मार्च 2022 में इसकी प्रबंधनाधीन संपत्ति करीब 1,410 करोड़ रुपये थी, जो अगस्त 2026 में बढ़कर लगभग 34,180 करोड़ रुपये हो गई।

इनवेस्को इंडिया स्मॉलकैप फंड

इनवेस्को इंडिया स्मॉलकैप फंड करीब 24.05 प्रतिशत के औसत पांच साल के रोलिंग रिटर्न के साथ तीसरे स्थान पर है। रिपोर्ट के मुताबिक, इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न 18.49 प्रतिशत रहा, जबकि निफ्टी स्मॉलकैप 250 का रिटर्न 12.42 प्रतिशत था। तीन साल की अवधि में भी इस फंड का प्रदर्शन अपने बेंचमार्क से बेहतर रहा। फंड का निवेश विभिन्न कंपनियों में फैला है। इसकी प्रमुख हिस्सेदारियों में साई लाइफ साइंसेज, इटर्नल, एम्बर एंटरप्राइजेज, आदित्य इन्फोटेक और कृष्णा इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज शामिल हैं।

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड इस श्रेणी के बड़े फंडों में शामिल है। रिपोर्ट में इसकी प्रबंधनाधीन संपत्ति करीब 81,000 करोड़ है। इसका औसत पांच साल का रोलिंग रिटर्न लगभग 24 प्रतिशत और वर्तमान पांच साल का रिटर्न करीब 17.1 प्रतिशत रहा। फंड के पोर्टफोलियो में बड़ी संख्या में शेयर शामिल हैं और किसी एक कंपनी में निवेश का हिस्सा अपेक्षाकृत सीमित रखा गया है। रिपोर्ट के अनुसार, इसकी तीन साल की अस्थिरता शीर्ष पांच फंडों में सबसे कम, करीब 17.5 प्रतिशत रही।

बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड

बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड करीब 22.55 प्रतिशत के औसत पांच साल के रोलिंग रिटर्न के साथ पांचवें स्थान पर है। इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न लगभग 18.75 प्रतिशत रहा। इसके प्रत्यक्ष निवेश विकल्प का वार्षिक व्यय अनुपात 0.42 प्रतिशत बताया गया है। रिपोर्ट में इसकी तीन साल की वार्षिकीकृत अस्थिरता 20 प्रतिशत बताई गई है, शीर्ष पांच फंडों में सबसे अधिक है।

इन बातों का रखें ध्यान

स्मॉलकैप फंड में निवेश करने से पहले केवल एक, तीन या पांच साल का रिटर्न देखकर फैसला करना पर्याप्त नहीं है। यह भी देखना चाहिए कि बाजार में गिरावट के दौरान फंड ने कैसा प्रदर्शन किया, उसका पोर्टफोलियो कितना विविध है।

रिटायरमेंट पर एनपीएस का पूरा पैसा निकालना जरूरी नहीं

60 साल की उम्र के बाद निकासी टालने और चरणबद्ध तरीके से पैसा लेने के विकल्प

अलर्ट

बिजनेस डेस्क

नौकरी के दौरान नियमित बचत करके रिटायरमेंट के लिए बड़ा फंड तैयार करना जितना जरूरी है, उतना ही अहम यह तय करना भी है कि रिटायरमेंट के बाद उस पैसे का इस्तेमाल कैसे किया जाए।

सामान्य निकासी में फड की राशि और ग्राहक की श्रेणी के अनुसार तय होंगे नियम

नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) में निवेश करने वाले कई लोगों को लगता है कि 60 साल की उम्र पूरी होते ही उन्हें पूरा पैसा निकालना होगा या फिर तुरंत पेंशन शुरू करनी पड़ेगी। लेकिन ऐसा हर स्थिति में जरूरी नहीं है। पेंशन फंड नियामक एवं विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) के नियमों में निवेशकों को निकासी और पेंशन की योजना बनाने के लिए कई विकल्प दिए गए हैं। इनमें एकमुश्त रकम निकालने, निकासी को आगे टालने और निर्धारित अवधि में किस्तों के जरिए पैसा लेने जैसे विकल्प शामिल हैं। हालांकि, कौन-सा विकल्प उपलब्ध होगा और कितनी रकम निकाली जा सकेगी, यह एनपीएस खाते की श्रेणी, कुल जमा फंड और लागू नियमों पर निर्भर करता है। इसलिए रिटायरमेंट के करीब पहुंच रहे निवेशकों को पहले अपने खाते पर लागू प्रावधान समझने चाहिए।



60 साल बाद कितना पैसा निकाल सकते हैं?

एनपीएस से सामान्य निकासी के नियम सभी निवेशकों के लिए एक जैसे नहीं हैं। गैर-सरकारी क्षेत्र के सामान्य एनपीएस खातों में लागू नियमों के अनुसार, यदि जमा पेंशन फंड 8 लाख तक है, तो पूरी रकम एकमुश्त निकालने का विकल्प उपलब्ध हो सकता है। इससे अधिक राशि होने पर निकासी की सीमा और शेष रकम के इस्तेमाल के नियम लागू होते हैं। कुछ परिस्थितियों में 8 लाख से अधिक और 12 लाख तक के फंड के लिए भी अलग विकल्प दिए गए हैं। बड़े फंड के मामले में लागू नियमों के अनुसार एक हिस्सा एकमुश्त निकाला जा सकता है, जबकि शेष रकम का इस्तेमाल एन्युटी खरीदने या निर्धारित अवधि में चरणबद्ध निकासी के लिए किया जा सकता है। सरकारी क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए अलग प्रावधान लागू हो सकते हैं। इसलिए यह मान लेना ठीक नहीं है कि हर एनपीएस खाताधारक को अनिवार्य रूप से केवल 60% रकम ही निकालने की अनुमति है।एनपीएस के पुराने नियमों में सामान्य निकासी के समय अधिकतम 60% रकम एकमुश्त निकालने और कम से कम 40% रकम से एन्युटी खरीदने का प्रावधान प्रमुख था। बाद के संशोधनों में कुछ श्रेणियों के लिए विकल्पों का विस्तार किया गया है। ऐसे में निकासी का निर्णय लेने से पहले नवीनतम नियम और अपने खाते की श्रेणी की पुष्टि करना जरूरी है।

निकासी टालने का विकल्प

यदि किसी निवेशक को 60 साल की उम्र में तुरंत पूरे फंड की जरूरत नहीं है, तो वह नियमों के अनुसार निकासी या एन्युटी खरीदने की प्रक्रिया को आगे टालने पर विचार कर सकता है। गैर-सरकारी क्षेत्र के सामान्य एनपीएस खातों में लागू प्रावधानों के तहत पात्र निवेशक 75 साल की उम्र तक खाते में बने रहने या निकासी को स्थगित करने के विकल्प का इस्तेमाल कर सकते हैं। इस दौरान खाते में निवेशित रकम बाजार के प्रदर्शन के अनुसार बढ़ या घट सकती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि फंड पर निश्चित ब्याज मिलता रहेगा। इक्विटी और बॉन्ड में निवेश की मात्रा के अनुसार जोखिम और संभावित रिटर्न बदल सकते हैं।

किस्तों में पैसा लेने की सुविधा

एनपीएस में चरणबद्ध निकासी के विकल्प भी उपलब्ध हैं। इसके तहत पात्र निवेशक पूरी निकासी एक साथ करने के बजाय निर्धारित अंतराल पर रकम ले सकते हैं। कुछ विकल्पों में एकमुश्त निकासी वाली रकम को किस्तों में लेने की सुविधा मिलती है, जबकि व्यवस्थित यूनिट निकासी के तहत निवेश की यूनिटें निर्धारित समय के अनुसार भुनाई जाती हैं। यह व्यवस्था म्यूचुअल फंड की व्यवस्थित निकासी योजना जैसी लग सकती है, लेकिन दोनों को एक जैसा नहीं समझना चाहिए।

एन्युटी से कैसे मिलेगी पेंशन?

एन्युटी एक ऐसा वित्तीय उत्पाद है, जिसे बीमा कंपनी से खरीदने पर चुनी गई योजना की शर्तों के अनुसार नियमित पेंशन मिलती है। एनपीएस में लागू नियमों के तहत कुछ स्थितियों में फंड का एक हिस्सा एन्युटी खरीदने के लिए इस्तेमाल करना पड़ता है। इससे रिटायरमेंट के बाद नियमित आय का स्रोत बन सकता है। एन्युटी खरीदने से पहले उसकी पेंशन दर, भुगतान की शर्तें, जीवनसाथी को मिलने वाले लाभ और मृत्यु के बाद खरीद मूल्य की वापसी जैसे विकल्पों को समझना चाहिए। अलग-अलग योजनाओं में मिलने वाली पेंशन और शर्तें अलग हो सकती हैं। एन्युटी का चुनाव केवल अनुमानित मासिक पेंशन देखकर नहीं करना चाहिए।

इन बातों पर दें ध्यान

सबसे पहले अपने एनपीएस खाते की श्रेणी और जमा फंड की मौजूदा राशि की जांच करें। इसके बाद यह तय करें कि रिटायरमेंट के बाद मासिक खर्च चलाने के लिए कितनी रकम चाहिए और अन्य स्रोतों से कितनी आय मिलेगी। यदि तुरंत बड़ी रकम की जरूरत है, तो एकमुश्त निकासी का विकल्प उपयोगी हो सकता है। वहीं नियमित आय की जरूरत होने पर एन्युटी या चरणबद्ध निकासी पर विचार किया जा सकता है। खाते में नामांकित व्यक्ति, बैंक खाते और अन्य जरूरी विवरण भी अपडेट रखें। निकासी से जुड़े कर नियमों की पुष्टि करना न भूलें। यह मानकर न चलें कि एनपीएस से निकाली गई हर रकम और उससे बाद में होने वाली कमाई हमेशा कर-मुक्त होगी।

आरएचपी में कारोबार, वित्तीय स्थिति, प्रमोटर्स के रिकॉर्ड को देखें

आईपीओ में पैसा लगाने से पहले परखें कंपनी की असली ताकत

- गई रकम के इस्तेमाल और शेयर के मूल्यांकन की भी जांच जरूरी
- केवल लिस्टिंग गेन की उम्मीद में निवेश करना पड़ सकता है भारी

बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में जब भी किसी कंपनी का आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) आता है, निवेशकों के बीच उसे लेकर उत्सुकता बढ़ जाती है। ग्रे मार्केट प्रीमियम, संभावित लिस्टिंग गेन और दूसरे निवेशकों की दिलचस्पी के आधार पर कई लोग आवेदन करने का फैसला कर लेते हैं, लेकिन किसी आईपीओ में भारी मांग होना इस बात की गारंटी नहीं है कि कंपनी भी उतनी ही मजबूत है या उसके शेयर से अच्छा मुनाफा मिलेगा। कई बार आकर्षक प्रचार के पीछे कमजोर वित्तीय स्थिति, बढ़ता कर्ज या जरूरत से ज्यादा मूल्यांकन छिपा हो सकता है। ऐसे में निवेशकों के लिए जरूरी है कि वे कंपनी की असली स्थिति समझने के बाद ही पैसा लगाने का फैसला करें। इसके लिए रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (आरएचपी) एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इसमें कंपनी के कारोबार, वित्तीय प्रदर्शन, जोखिम, प्रबंधन, प्रमोटर्स और आईपीओ से जुटाई जाने वाली रकम के इस्तेमाल की जानकारी दी जाती है। दस्तावेज बड़ा जरूर होता है, लेकिन कुछ अहम पहलुओं पर ध्यान देकर निवेशक बेहतर निर्णय ले सकते हैं।

1. कंपनी का कारोबार और कमाई का आधार समझें

आईपीओ में निवेश करने से पहले सबसे पहले यह समझें कि कंपनी क्या कारोबार करती है, उसके ग्राहक कौन हैं और उसकी कमाई किन उत्पादों या सेवाओं से होती है। यह भी देखें कि कंपनी जिस क्षेत्र में काम करती है, वहां भविष्य में कारोबार बढ़ने की कितनी संभावनाएं हैं और प्रतिस्पर्धा कितनी कड़ी है। केवल कंपनी के विस्तार संबंधी दावों पर भरोसा करना पर्याप्त नहीं है। पिछले तीन वित्तीय वर्षों की बिक्री, मुनाफे और नकदी प्रवाह के आंकड़ों की तुलना करें। अगर बिक्री लगातार बढ़ रही है, लेकिन मुनाफा स्थिर है या घट रहा है, तो इसकी वजह जानना जरूरी है। इसी तरह, कंपनी के खाते में मुनाफा दिखने के बावजूद अगर उसके नियमित कारोबार से पर्याप्त नकदी नहीं आ रही है, तो यह चिंता का संकेत हो सकता है। यह भी देखें कि कंपनी की कमाई कुछ ही बड़े ग्राहकों पर निर्भर तो नहीं है।

2. प्रमोटर्स और प्रबंधन का पिछला रिकॉर्ड जांचें

कंपनी की सफलता में उसके प्रबंधन और प्रमोटर्स की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इसलिए आरएचपी में उनके अनुभव, पिछली कारोबारी गतिविधियों और कंपनी चलाने के तरीके से जुड़ी जानकारियों पर ध्यान दें। देखें कि प्रमोटर्स ने पहले किन कारोबारों में काम किया है और उनका रिकॉर्ड कैसा रहा है। कंपनी के प्रमुख अधिकारियों के वेतन, प्रमोटर्स की हिस्सेदारी और गिरवी रखे गए शेयरों की जानकारी भी उपयोगी हो सकती है। इसके अलावा, कंपनी या उसके प्रमुख अधिकारियों के खिलाफ चल रहे महत्वपूर्ण कानूनी मामलों, नियामकीय कार्रवाई और वित्तीय अनियमितताओं से जुड़े खुलासों को ध्यान से पढ़ें।

3. प्रमोटर्स से जुड़ी कंपनियों के लेनदेन पर नजर रखें

कई कंपनियां अपने प्रमोटर्स, उनके परिवार के सदस्यों या उनसे जुड़ी दूसरी संस्थाओं के साथ कारोबार करती हैं। इन्हें संबंधित पक्षों के साथ लेनदेन कहा जाता है। ऐसे लेनदेन अपने आप में गलत नहीं हैं, लेकिन इनकी रकम, शर्तों और कारोबारी औचित्य की जांच जरूरी है। आरएचपी में देखें कि कंपनी प्रमोटर्स से जुड़ी संस्थाओं को कितना भुगतान करती है, उनसे कितना सामान या सेवाएं खरीदती है और उन्हें कितना पैसा देती है। यह भी समझें कि लेनदेन सामान्य कारोबारी शर्तों पर हो रहा है या नहीं। पिछले तीन वर्षों के आंकड़ों में अचानक बड़ी बढ़ोतरी, असामान्य भुगतान या संबंधित पक्षों के साथ लगातार बढ़ते लेनदेन दिखाई दें, तो उनकी वजह तलाशें।

4. आईपीओ से जुटाई जाने वाली रकम का इस्तेमाल जानें

आईपीओ में आवेदन करने से पहले यह समझना जरूरी है कि कंपनी निवेशकों से पैसा क्यों जुटा रही है। आम तौर पर आईपीओ में फ्रेश इश्यू और ऑफर फॉर सेल (ओएफएस) शामिल हो सकते हैं। फ्रेश इश्यू में कंपनी नए शेयर जारी करके रकम जुटाती है, जबकि ओएफएस में मौजूदा शेयरधारक अपने शेयर बेचते हैं। ओएफएस से मिलने वाली रकम कंपनी के बजाय शेयर बेचने वाले निवेशकों को मिलती है। आरएचपी में देखें कि फ्रेश इश्यू से मिलने वाले पैसे का इस्तेमाल किस उद्देश्य से किया जाएगा। कंपनी कर्ज चुकाना चाहती है, नई उत्पादन क्षमता स्थापित करना चाहती है, कारोबार का विस्तार करना चाहती है या सामान्य कॉरपोरेट जरूरतों के लिए रकम जुटा रही है? इन उद्देश्यों का कंपनी की भविष्य की वृद्धि पर क्या असर पड़ सकता है, इसे समझें। अगर कंपनी कर्ज चुकाने के लिए पैसा जुटा रही है, तो इससे उसकी वित्तीय स्थिति में सुधार हो सकता है।

5. शेयर का मूल्यांकन और जोखिम जरूर परखें

अच्छी कंपनी का आईपीओ भी खराब निवेश साबित हो सकता है, अगर उसके शेयर बहुत महंगे मूल्य पर पेश किए जा रहे हों। इसलिए कंपनी की वित्तीय स्थिति के साथ उसके मूल्यांकन की तुलना भी जरूरी है। आरएचपी में कंपनी की प्रति शेयर आय, मूल्य-आय अनुपात (पी/ई), शुद्ध परिसंपत्ति मूल्य और दूसरी वित्तीय जानकारियों को देखें। समान कारोबार करने वाली सूचीबद्ध कंपनियों के मूल्यांकन से इसकी तुलना करें। यह समझने की कोशिश करें कि कंपनी जिस कीमत पर शेयर पेश कर रही है, क्या उसका आधार मौजूदा कमाई, भविष्य की वृद्धि और कारोबारी संभावनाओं से मेल खाता है।

खबर संक्षेप

श्रीरामचरितमानस के मास पारायण का शुभारंभ 26 से

फतेहाबाद। श्री रघुनाथ मंदिर में कार्तिक मास के उपलक्ष्य में श्रीरामचरितमानस के मास पारायण पाठ का शुभारंभ 26 अक्टूबर, सोमवार को होगा। मंदिर सभा के प्रधान टेकचंद मिढ्ढा ने बताया कि मंदिर में प्रतिवर्ष कार्तिक मास के दौरान श्रीरामचरितमानस के मास पारायण का आयोजन किया जाता है। इस धार्मिक अनुष्ठान में बड़ी संख्या में श्रद्धालु भाग लेकर भगवान श्रीराम की महिमा का गुणगान करते हैं। टेकचंद मिढ्ढा ने बताया कि मंदिर के पुजारी राकेश शर्मा प्रतिदिन अपने मुखारविंद से संगीतमय श्रीरामचरितमानस का पाठ करेंगे। उनके साथ सैकड़ों श्रद्धालु भी सामूहिक रूप से पाठ में शामिल होंगे। इस अनुष्ठान का समापन 24 नवंबर को पाठ के भोग के साथ किया जाएगा।

भंडारा सामग्री लेकर ट्रस्ट के पदाधिकारी रवाना

सिरसा। श्री बजरंग भंडारा सेवा ट्रस्ट द्वारा सालासर धाम (राज.) में तीन दिवसीय अर्द्धवार्षिक विशाल भंडारे के लिए सिरसा से ट्रस्ट पदाधिकारी भंडारा सामग्री लेकर रवाना हुए। ट्रस्ट के प्रधान शिव शंकर गोयल ने बताया कि सतीश अरोड़ा व श्याम प्रेमी वरूण वधवा ने झंडी देकर भंडारा सामग्री दल को अनाज मंडी से श्रीबालाजी महाराज का जयकारा लगाकर रवाना किया। प्रधान शिव शंकर गोयल ने बताया कि हर बार की तरह इस बार भी तीन दिवसीय भंडारा लगाया जा रहा है।

शरद पूर्णिमा महोत्सव आज से

सिरसा। बालाजी महाराज का शरद पूर्णिमा महोत्सव 25 अक्टूबर से 27 अक्टूबर तक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। इस तीन दिवसीय आयोजन को लेकर श्री सालासरधाम मंदिर प्रबंधन कमेटी की ओर से व्यापक तैयारियां की जा रही है। हजारों श्रद्धालुओं की श्रद्धा के केंद्र श्री सालासरधाम मंदिर में 25 से 27 अक्टूबर तक विविध धार्मिक अनुष्ठान आयोजित किए जाएंगे। सालासरधाम मंदिर में हजारों लोगों की आस्था है और सिरसा व आसपास से हजारों लोग बालाजी के दरबार में धोक लगाने के लिए पहुंचते हैं। शरद पूर्णिमा महोत्सव के पहले दिन 25 अक्टूबर को सुबह सवा 8 बजे श्री हनुमत महायज्ञ एवं श्री महालक्ष्मी पूजन किया जाएगा।

आज लगेगा निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

फतेहाबाद। सरबत दा भला संस्था डॉ. एसपी सिंह ओबरॉय के सानिध्य में समाजसेवा के कार्य कर रही है। इसी कड़ी में रविवार को सुबह 7 से 8 बजे तक जगजीवनपुरा स्थित गुरुद्वारे के साथ पंडित दीनदयाल उपाध्याय पार्क में निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया जाएगा। प्रोजेक्ट इंचार्ज वीना भ्याना और धर्मपाल चावला ने बताया कि शिविर में लोगों के बीपी और शुगर की निशुल्क जांच की जाएगी। इसके साथ ही वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. महेंद्र मेहता और डॉ. सुमन बजाज द्वारा निशुल्क चिकित्सकीय परामर्श भी दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि योग मंदिर की ओर से हरड़ और आंवले का वितरण किया जाएगा। साथ ही इनके उपयोग और स्वास्थ्य लाभों के बारे में भी जानकारी दी जाएगी।

राज्यसभा सांसद ने गांव कन्हड़ी में मूर्ति अनावरण कार्यक्रम में की शिरकत

महर्षि वाल्मीकि की शिक्षाएं सामाजिक समरसता की देती है प्रेरणा : बराला

हरिभूमि न्यूज ⏭ टोहाना

- केंद्र सरकार देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक परंपराओं और महान विभूतियों के योगदान को संरक्षित करने तथा नई पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए विभिन्न स्तरों पर भी प्रयास कर रही
- हरियाणा सरकार भी संत-महापुरुषों के जीवन दर्शन और सामाजिक योगदान को व्यापक पहचान दिलाने के लिए कार्य कर रही



टोहाना। वाल्मीकि जयंती अवसर पर मुख्यातिथि सुभाष बराला को सम्मानित करते आयोजक। *फोटो : हरिभूमि*

राज्यसभा सांसद सुभाष बराला ने शनिवार को गांव कन्हड़ी में आयोजित महर्षि वाल्मीकि जी के प्रकट दिवस और मूर्ति अनावरण कार्यक्रम में शिरकत की। इस अवसर पर उन्होंने महर्षि वाल्मीकि जी के जीवन और शिक्षाओं को याद करते हुए कहा कि उनके आदर्श आज भी समाज को सत्य, सदाचार, समानता और मानवता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

सुभाष बराला ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि जी ने रामायण जैसे महान ग्रंथ की रचना कर भारतीय संस्कृति और साहित्य को समृद्ध किया। उनकी शिक्षाएं मर्यादा, कर्तव्य, त्याग और नैतिक मूल्यों का संदेश देती हैं। उनके विचारों को आत्मसात करके समाज में आपसी भाईचारे, सद्भाव और सामाजिक समरसता को मजबूत किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि संत-महापुरुषों ने सदैव समाज को सही दिशा दिखाने और सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके जीवन संघर्षों और विचारों से नई पीढ़ी को परिचित करवाना आवश्यक है, ताकि युवा उनके आदर्शों से प्रेरणा लेकर समाज और राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दे सकें।

संत-महापुरुष प्रचार-प्रसार योजना से जन-जन तक पहुंचेगा संदेश

राज्यसभा सांसद सुभाष बराला ने बराला ने कहा कि केंद्र सरकार देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक परंपराओं और महान विभूतियों के योगदान को संरक्षित करने तथा नई पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए विभिन्न स्तरों पर भी प्रयास कर रही है। वहीं, हरियाणा सरकार भी संत-महापुरुषों के जीवन दर्शन और सामाजिक योगदान को व्यापक पहचान दिलाने के लिए कार्य कर रही है।

उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार की संत-महापुरुष सम्मान एवं विचार प्रचार-प्रसार योजना इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस योजना का उद्देश्य संतों और महापुरुषों की शिक्षाओं को आमजन तक पहुंचाना तथा उनके जन्मदिवस और स्मृति अवसरों को सरकारी स्तर पर सम्मानपूर्वक मनाकर उनके विचारों के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। ऐसे प्रयासों से युवा पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत को समझने और महापुरुषों के आदर्शों से प्रेरणा लेने का अवसर मिलता है। उन्होंने कहा कि सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों का मूल उद्देश्य समाज के सभी वर्गों को विकास की मुख्यधारा से जोडऩा और समान अवसर उपलब्ध करवाना है। सामाजिक समरसता, शिक्षा, सम्मान और जनकल्याण के प्रति जागरूकता बढ़ाने में संत-महापुरुषों की शिक्षाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। महर्षि वाल्मीकि जी के आदर्श हमें ऐसे समाज के निर्माण की प्रेरणा देते हैं, जहां प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान मिले और आपसी सद्भाव बना रहे। सांसद सुभाष बराला ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि जी के विचारों को आत्मसात कर हम आने वाली पीढिय़ों को बेहतर संस्कार देने और समरस समाज के निर्माण में अपना योगदान दे सकते हैं। इस अवसर पर नगर परिषद अध्यक्ष नरेश बंसल, अनिल मेहता समाजसेवी, रमन मडिय़ा, दलजीत नैन, कमेटी प्रधान शीशपाल, सुरेंद्र, सतबीर पूर्व सरपंच, रामेहर नैन, विकास नैन, मंजीत नैन, अमृत नैन, इश कुमार, कृष्ण आदीवाल, विक्की, सोनू, महावीर, रमेश नैन सहित कार्यक्रम में मंदिर समिति के पदाधिकारी, गांव के गणमान्य व्यक्ति, श्रद्धालु और ग्रामीण उपस्थित रहे।

एक राष्ट्र, एक चुनाव विषय पर 31 को होगी भाषण प्रतियोगिता

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

खास बातें

- 18 से 25 वर्ष आयु वर्ग के युवा ले सकेंगे भाग, विजेताओं को राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में प्रतिभागिता का मौका
- पहले चरण में देश के सभी 786 जिलों में जिला स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगें
- राज्य स्तरीय कार्यक्रमों का आयोजन राज्य विधानसभाओं के परिसर में किया जाएगा, जबकि राष्ट्रीय स्तर का कार्यक्रम नई दिल्ली स्थित संसद के सेंट्रल हॉल में होगा

युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में मेरा युवा भारत द्वारा आयोजित विकसित भारत युवा संसद 2027 के अंतर्गत 31 अक्टूबर को एमएम पीजी कॉलेज में एक राष्ट्र, एक चुनाव विषय पर भाषण प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। प्रतियोगिता में 18 से 25 वर्ष की आयु के इच्छुक युवा भाग ले सकते हैं।

मेरा युवा भारत की जिला युवा अधिकारी रीना केसरीया ने बताया कि जिले के इच्छुक एवं पात्र युवा माय भारत पोर्टल पर वॉलंटियर फॉर भारत सेक्शन में जाकर राज्य एवं जिले का चयन करें। इसके बाद विकसित भारत युवा संसद बैनर पर क्लिक करके अपना आवेदन कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को राज्य स्तरीय कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर मिलेगा। उन्होंने बताया कि विकसित भारत युवा संसद युवाओं में नेतृत्व क्षमता विकसित करने तथा लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय पहल है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य वर्ष 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को साकार करने में युवाओं की भूमिका को सशक्त बनाना है। इसके माध्यम से देशभर के प्रतिभाशाली युवा राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर विचार-विमर्श करेंगे और अपने नवीन विचार एवं सुझाव प्रस्तुत करेंगे। साथ ही, युवाओं को नीति-निर्माताओं, विषय विशेषज्ञों एवं प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों के साथ संवाद करने का अवसर भी मिलेगा।

जिला युवा अधिकारी ने बताया कि विकसित भारत युवा संसद का आयोजन तीन स्तरों पर किया जाएगा। पहले चरण में देश के सभी 786 जिलों में जिला स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इसके बाद राज्य स्तरीय कार्यक्रमों का आयोजन राज्य विधानसभाओं के परिसर में किया जाएगा, जबकि राष्ट्रीय स्तर का कार्यक्रम नई दिल्ली स्थित संसद के सेंट्रल हॉल में प्रस्तावित है। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम से संबंधित अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए इच्छुक युवा भोडिया खेड़ा स्टेडियम स्थित मेरा युवा भारत कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

नॉर्दर्न नाइट्स की खिताबी जीत में एसएस गर्ल्स स्कूल की बेटियां छाई

हरिभूमि न्यूज ⏭ सिरसा



सिरसा। खिलाड़ियों को सम्मानित करती प्राचार्य शीला पूनियां। *फोटो : हरिभूमि*

दिल्ली की सेंट्रल चार्जर्स को फाइनल में शिकस्त देकर नॉर्दर्न नाइट्स ने सीबीएसई नॉर्थ जोन अंडर-19 नेशनल क्रिकेट चैंपियनशिप 2026-27 का खिताब अपने नाम किया। इस खिताबी जीत में शाह सतनाम जी गर्ल्स स्कूल सिरसा की चार खिलाड़ियों ने नॉर्दर्न नाइट्स की ओर से खेलते हुए अहम भूमिका निभाई। खासकर स्कूल की अनमोल ने फाइनल में महज 8 रन देकर 4 विकेट चटकाए और विपक्षी टीम की बल्लेबाजी को बड़ा झटका दिया। उनके इस शानदार प्रदर्शन के लिए उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। इतना ही नहीं अनमोल का चयन स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसजीएफआई) की राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए भी हुआ है। नॉर्दर्न नाइट्स की विजेता टीम में शामिल स्कूल की चारों खिलाड़ियों व प्रशिक्षक किरण सूथार का शनिवार को विद्यालय पहुंचने पर स्कूल प्रिंसीपल डा. शीला पूनियां और स्टाफ सदस्यों ने फूलमालाएं पहनाकर जोरदार स्वागत किया। प्रतियोगिता में कक्षा 12वीं की रूहानी, कक्षा 11वीं की अनमोल व गगनदीप कौर और कक्षा 10वीं की योगिता शर्मा ने शानदार खेल का प्रदर्शन किया। खिलाड़ियों और प्राचार्या डॉ. शीला पूनिया ने इस उपलब्धि का श्रेय डेरा प्रमुख की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन को दिया।

50 विद्यार्थी तीन दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण पर रवाना

हरिभूमि न्यूज ⏭ भूना



भूना। गांव जांडली खुर्द के सरकारी स्कूल की विद्यार्थियों को भ्रमण हेतु सरपंच, ब्लॉक समिति चेयरमैन और जिला पार्षद ने हरी झंडी दिखाकर बस को किया रवाना करते हुए। *फोटो : हरिभूमि*

शहीद श्री बलवंत राय राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जांडली खुर्द के 50 विद्यार्थी और आठ स्टाफ सदस्य तीन दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण पर रवाना हुए। सरपंच बलवंत सिंह पूनिया, ब्लॉक समिति भूना के चेयरमैन महेंद्र पाल सोढ़ और जिला पार्षद गगनदीप गोदारा ने बस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान विद्यार्थियों में खासा उत्साह देखने को मिला।

शैक्षणिक भ्रमण के दौरान कक्षा छठी से 12वीं तक के विद्यार्थी वाघा बॉर्डर परेड, अमृतसर स्थित स्वर्ण मंदिर और कपूरथला की साइंस सिटी का अवलोकन करेंगे। भ्रमण का उद्देश्य विद्यार्थियों को किताबी ज्ञान के साथ ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक स्थलों की प्रत्यक्ष जानकारी देना है। इससे विद्यार्थियों को देश की सीमाओं की सुरक्षा, धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत और विज्ञान से जुड़ी जानकारियां प्राप्त होंगी।

विद्यार्थियों के साथ विद्यालय प्रभारी कुलजीत सिंह, वरिष्ठ हिंदी प्राध्यापक संजय सिंह, गणित प्राध्यापक कैलाश चंद्र शर्मा, भूगोल प्रवक्ता वीरेंद्र कुमार, गणित अध्यापक सुरेंद्र कुमार, हिंदी अध्यापक राम बिलाश और संस्कृत अध्यापिका रेमन पूनिया मौजूद रहेंगे। इनके अलावा विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्य सुनील कुमार भी विद्यार्थियों के साथ रहेंगे। विद्यालय परिवार की ओर से अंग्रेजी प्रवक्ता सुनील दत्त शर्मा और शारीरिक प्रशिक्षण अनुदेशक मनफूल सिंह ने भ्रमण पर जाने वाले सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों और एसएमसी सदस्यों को शुभकामनाएं दीं।

उत्तम नगर में गली के लेवल को लेकर बवाल, मौके पर पुलिस बुलाई

हांसी। उत्तम नगर में शनिवार को गली के लेवल को लेकर विवाद खड़ा हो गया। करीब 70 से 80 परिवारों ने निर्माण कार्य पर एतराज जताते हुए आरोप लगाया कि गली का लेवल तीन से चार इंच ऊंचा किया जा रहा है। इससे बरसात के दिनों में पानी की निकासी प्रभावित होने और जलभराव की समस्या पैदा होने का खतरा है। विरोध बढ़ने पर नगर परिषद अधिकारियों को मौके पर पुलिस बुलानी पड़ी। कॉलोनीवासियों की मांग है कि पास में स्थित ड्रेन की तरफ उचित ढलान रखते हुए गली का निर्माण कराया जाए, ताकि बारिश का पानी आसानी से निकल सके। लोगों ने आरोप लगाया कि कॉलोनी में कुछ लोग अधिकारियों तक अपनी पहुंच का हवाला देकर गली का लेवल तय करने की प्रक्रिया को प्रभावित कर रहे हैं। उनका कहना है कि आने वाले दिनों में इसका खामियाजा पूरी कॉलोनी को भुगतना पड़ सकता है।स् थानीय लोगों के अनुसार, वे इस मामले में दो बार विधायक विनोद भ्याना से मिल चुके हैं। उनका दावा है कि विधायक ने अधिकारियों को जीरो लेवल के अनुसार निर्माण करने के निर्देश दिए थे, लेकिन इसके बावजूद विवाद का समाधान नहीं हो पाया। गली निर्माण विवाद को देखते हुए मौके पर ड्यूटी मजिस्ट्रेट जयवीर सिंह तैनात किए गए। उन्होंने नगर परिषद के एमई के साथ स्थिति का जायजा लिया।

आधुनिक तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता विद्यालयों की कार्यप्रणाली को बना सकती है अधिक प्रभावी: डीपीसी

हरिभूमि न्यूज ⏭ सिरसा

- एआई के माध्यम से शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक रोचक, सरल और प्रभावी बनाया जा सकता है : मास्टर ट्रेनर राजेश

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मेला ग्राउंड में आयोजित विद्यालय प्राचार्यों के पांच दिवसीय नेतृत्व विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम शनिवार को संपन्न हो गया। जिला परियोजना समन्वयक, सिरसा कृष्ण लाल ने कहा कि वर्तमान समय में विद्यालय प्राचार्यों के लिए आधुनिक तकनीक, डिजिटल संसाधनों और कृत्रिम बुद्धिमत्ता की समझ अत्यंत आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि एक कुशल प्राचार्य वही है, जो नई तकनीकों को अपनाते हुए विद्यालय की शैक्षिक गुणवत्ता, प्रशासनिक दक्षता और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को नई दिशा प्रदान करे। डाइट डिंग, सिरसा के प्रवक्ता एवं एससीईआरटी नामित मास्टर ट्रेनर डॉ. राजेश खुराना ने विद्यालयी शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) विषय पर सत्र लेते हुए बताया कि एआई के माध्यम से शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक रोचक, सरल और प्रभावी बनाया जा सकता है। उन्होंने विद्यालयी कार्यों में इसके व्यावहारिक उपयोग तथा तकनीक के जिम्मेदार इस्तेमाल पर प्रकाश डाला।

डाइट डिंग विषय विशेषज्ञ डॉ. मनोज पुरी ने सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का एकीकरण एवं शैक्षिक तकनीक विषय पर चर्चा करते हुए बताया कि डिजिटल संसाधनों का उचित उपयोग शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावशाली बनाने में सहायक है। डाइट डिंग विषय विशेषज्ञ डा. विनोद कुमार ने विद्यालय सुरक्षा, साइबर सुरक्षा, डिजिटल नागरिकता एवं डेटा गोपनीयता विषय पर प्राचार्यों को जागरूक किया और डिजिटल वातावरण में सुरक्षित व्यवहार अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया। डाइट विषय विशेषज्ञ डा. विनोद कुमार ने डिजिटल अभिलेख, ऑनलाइन सुरक्षा एवं विद्यालय प्रशासन में तकनीक का उपयोग विषय पर जानकारी देते हुए विद्यालयों में डिजिटल रिकॉर्ड के व्यवस्थित रखरखाव, ऑनलाइन सुरक्षा और प्रशासनिक कार्यों में तकनीक के प्रभावी उपयोग के महत्वपूर्ण पहलुओं को समझाया।

दो 30 बोर के अवैध पिस्तौल व 3 कारतूस के साथ एक गिरफ्तार

हिसार। सीआईए मिल गेट की टीम ने दुर्जनपुर से एक युवक को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से 30 बोर के दो अवैध पिस्तोल व तीन जिंदा कारतूस बरामद किए हैं। आरोपी की पहचान असरावां निवासी मनोज के रूप में हुई है। सीआईए मिल गेट प्रभारी जगदीश कुमार के अनुसार, पुलिस टीम को गुप्त सूचना मिली थी कि मनोज नामक व्यक्ति के पास अवैध हथियार हैं। टीम ने तुरंत कार्रवाई की और आरोपी को काबू कर लिया। उसके कब्जे से 30 बोर के दो अवैध पिस्तोल व तीन जिंदा कारतूस बरामद हुए।

38 पेटी बीयर बरामद, एक काबू

हिसार। सदर पुलिस ने गांव शाहपुर में नाकाबंदी के दौरान एक बोलेरो कैंपर से अलग-अलग ब्रांड की बीयर की 38 पेटियां बरामद की हैं। पुलिस ने मौके से एक आरोपी को गिरफ्तार कर वाहन को भी अपने कब्जे में ले लिया है। सदर थाना के पीएसआई विकास कुमार ने बताया कि वह शाहपुर क्षेत्र में मौजूद थे। इसी दौरान टीम को गुप्त सूचना मिली। सूचना के आधार पर पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए नाकाबंदी की और एक बोलेरो कैंपर को रुकवाकर उसकी तलाशी ली। तलाशी के दौरान वाहन से अलग-अलग ब्रांड की बीयर की 38 पेटियां बरामद हुईं।

अग्रोहा धाम में आज लगेगा वार्षिक मेला

फतेहाबाद। अग्रोहा धाम में 43वां विशाल वार्षिक अग्रोहा मेला 25 अक्टूबर रविवार को बड़ी धूमधाम के साथ आयोजित किया जाएगा। इस विशाल मेले में राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बजरंग गर्ग उपस्थित रहेंगे तथा अनंत विभूषित जगद्गुरु महाब्रह्मार्ऋषि श्री कुमार स्वामी जी का आशीर्वाद सभी को प्राप्त होगा। अग्रोहा विकास ट्रस्ट, फतेहाबाद की जिला अध्यक्ष नेहा मित्तल ने बताया कि पूर्व राज्यसभा सांसद सुभाष चन्द्रा और विधायक सावित्री जिंदल मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित रहेंगे। इस भव्य धार्मिक एवं सामाजिक आयोजन को लेकर श्रद्धालुओं और अग्रवाल समाज में विशेष उत्साह है। नेहा मित्तल ने बताया कि कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 9 बजे भंडारा आरंभ के साथ होगी। इसके बाद 10 बजे छप्पन भोग लगाया जाएगा और सुबह सवा 10 बजे ध्वजारोहण किया जाएगा। श्रद्धालुओं और उपस्थित जनों के लिए दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम व सम्मेलन का आयोजन रखा गया है। वहीं, सांस्कृतिक कार्यक्रम में चार-चांद लगाने के लिए प्रसिद्ध कलाकार अंजलि द्विवेदी और मासूम शर्मा अपनी प्रस्तुति देंगे। उन्होंने बताया कि इस वार्षिक मेले में श्रद्धालु माता महालक्ष्मी देवी जी, दादा अग्रसैन, माता सरस्वती, माता वैष्णो देवी, अमरनाथ जी की बर्फानी गुफा, तिरूपति बालाजी, भैरोबाबा और रामेश्वर धाम के दर्शन कर सकेंगे। इसके अलावा माँ गंगा अवतरण झांकी, 90 फुट ऊंची बाबा हनुमान जी की विशाल प्रतिमा, और विद्युत संचालित श्री कृष्ण लीला व श्री राम लीला की झांकियां विशेष आकर्षण का केंद्र रहेंगी। उन्होंने बताया कि अग्रोहा के धरोहरों को देखने तथा मंदिरों में पूजा करने के साथ-साथ, मेले में बच्चों के मनोरंजन के लिए अप्पू घर, अनेक प्रकार के मनोरंजक झूले और विभिन्न प्रकार की स्टॉलें भी लगाई जाएंगी।

राजकीय हाई स्कूल, फतेहपुरिया नियामत खां व स्वामी दयानंद सीनियर सेकेंडरी स्कूल, केहरवाला में कार्यक्रम

कमेटी ने बच्चों को बाल अधिकारों व सुरक्षा के प्रति किया जागरूक

हरिभूमि न्यूज ⏭ सिरसा



सिरसा। बच्चों को जागरूक करते कमेटी सदस्य। *फोटो : हरिभूमि*

चाइल्ड वेलफेयर कमेटी (सीडब्ल्यूसी) सिरसा की ओर से बच्चों को उनके अधिकारों एवं सुरक्षा के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से राजकीय हाई स्कूल, फतेहपुरिया नियामत खां तथा स्वामी दयानंद सीनियर सेकेंडरी स्कूल, केहरवाला में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए।

कार्यक्रम में चाइल्ड वेलफेयर कमेटी के चेयरमैन डॉ. मदन लाल तथा कमेटी के सदस्य अनिल कुमार ढिढारिया, भावना शर्मा एवं निधि मेहता ने विद्यार्थियों को पॉक्सो अधिनियम, बाल यौन शोषण से बचाव, बाल श्रम रोकथाम तथा बाल अधिकारों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

चेयरमैन डॉ. मदन लाल ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करना और उनके सर्वांगीण विकास के लिए अनुकूल वातावरण उपलब्ध करवाना समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है।

उन्होंने विद्यार्थियों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहने तथा किसी भी प्रकार के शोषण या अनुचित व्यवहार के प्रति सजग रहने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि ऐसी किसी भी स्थिति का सामना करने पर बच्चों को बिना डर के अपने अभिभावकों, अध्यापकों अथवा संबंधित अधिकारियों को इसकी सूचना देनी चाहिए।

पॉक्सो अधिनियम के प्रावधानों की दी जानकारी

कमेटी के सदस्यों ने पॉक्सो अधिनियम के विभिन्न प्रावधानों की जानकारी देते हुए बताया कि बच्चों को यौन अपराधों से सुरक्षित रखने के लिए कानून में कड़े प्रावधान किए गए हैं। उन्होंने बाल श्रम को रोकने, शिक्षा के महत्व को समझने तथा बच्चों के लिए सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। दोनों विद्यालयों के प्राचार्यों एवं अध्यापकों ने चाइल्ड वेलफेयर कमेटी, सिरसा के सदस्यों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के जागरूकता कार्यक्रम बच्चों को उनके अधिकारों, सुरक्षा तथा सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

खबर संक्षेप



गांव बिसला में चलाया विशेष सफाई अभियान

फतेहाबाद। जिले के गांव बिसला में खंड विकास एवं पंचायत अधिकारी के निर्देशों के तहत आज एक विशेष सफाई अभियान चलाया गया। इस अभियान के दौरान गांव की मुख्य सडक़ों, गलियों और सार्वजनिक जगहों पर विशेष रूप से सफाई की गई तथा वहां फैले कूड़े-कर्कट व रूडिय़ों को हटवाया गया, ताकि ग्रामीणों को स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण मिल सके। सफाई अभियान के माध्यम से ग्रामीणों को स्वच्छता का संदेश भी दिया गया। इस अवसर पर सरपंच पूनम रानी, पंच रमेश कुमार वर्मा, पंच मोहित कुमार, मास्टर छोटू राम, ग्राम सचिव नरेन्द्र कुमार, राजेश मताना, रामनारायण, सुंदर लाल, अजीत काजला आदि मौजूद रहे।

दशरथ मांझी की कहानी से बच्चों को किया प्रोत्साहित

सिरसा। दी सिरसा स्कूल,सिरसा में माता महादेवी कौशिक बालसाहित्य संस्थान, सिरसा द्वारा आयोजित 5 दिवसीय बाल लेखन कार्यशाला के चौथे दिन की शुरूआत 'रास्ता है लंबा भाई ' समूह गीत से हुई। मुख्य संदर्भदाता बालप्रहरी संपादक उदय किरौला ने बच्चों को नाटक 'मोबाइल टन टनाटन' का अभ्यास करवाया तथा डॉ. शील कौशिक द्वारा लिखा नाटक 'धूप का जादू' जाह्नवी, दृशी,बारबी तथा जसमीत ने प्रस्तुत किया। संस्था के सचिव हरीश सेठी 'झिलमिल' ने बताया कि इस बाल लेखन कार्यशाला में रा.व.मा. विद्यालय सिकन्दरपुर, वैदवाला, नेजाडेला कलां, चतरगढ़पट्टी, खैरपुर, खैरेकां, दी सिरसा स्कूल, विकास हाई स्कूल, डीएवी स्कूल, शाह सतनाम गर्ल्ज स्कूल, नाइन टू वन स्कॉलर हैवन स्कूल के विद्यार्थी प्रतिभाग कर रहे हैं।

स्टॉर्म वाटर प्रोजेक्ट बना संकटः हीरालाल शर्मा

सिरसा। हरियाणा प्रदेश व्यापार मंडल कोर कमेटी की बैठक शनिवार को हुई, जिसमें स्टॉर्म वाटर प्रोजेक्ट को लेकर हो रही परेशानी को लेकर व्यापारियों ने चर्चा की। व्यापार मंडल के जिला प्रधान हीरालाल शर्मा ने कहा कि स्टॉर्म वाटर प्रोजेक्ट व्यापारियों व आमजन के लिए नासूर बन गया है। उन्होंने कहा कि दीपावली का त्योहार कुछ दिनों बाद है और शादियों का सीजन भी शुरू होने वाला है। ऐसे में अगर बाजारों में आवागमन का सिस्टम नहीं सुधारा गया तो व्यापारी बर्बाद हो जाएगा। यही नहीं मीटिंग में ट्रेफिक व पार्किंग व्यवस्था को लेकर भी योजना बनाने पर विचार किया गया। हरियाणा प्रदेश व्यापार मंडल के शहरी प्रधान कीर्ति गर्ग ने कहा कि इस समस्या को लेकर पूर्व में भी कई बार अधिकारियों के साथ-साथ सरकार को भी अवगत करवाया जा चुका है।

26 अक्तूबर से होगा छठा कार्तिक मास अनुष्ठान

फतेहाबाद। मंडल टाउन में योग दिव्य मंदिर एवं योग अभ्यास केंद्र की ओर से छठे कार्तिक मास अनुष्ठान का आयोजन किया जा रहा है। यह धार्मिक अनुष्ठान 26 अक्टूबर 2026, सोमवार को शरद पूर्णिमा से शुरू होकर 24 नवंबर 2026, मंगलवार तक चलेगा। जानकारी देते हुए संस्था के कोषाध्यक्ष धर्मपाल चावला व योगाचार्य कर्मचंद सरदाना ने बताया कि आयोजन के दौरान प्रतिदिन प्रातः साढ़े 7 बजे से साढ़े 8 बजे तक हवन यज्ञ किया जाएगा। उन्होंने बताया कि इस अनुष्ठान में प्रत्येक साधक को 21 मंत्रों की आहुति देने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

दूषित पानी आने के कारणों के लिए पेयजल और सीवर लाइनों की जांच शुरू

दूषित पेयजल की शिकायत के बाद हरकत में आया जनस्वास्थ्य विभाग

- वार्डवासियों ने इस संबंध में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी और उपायुक्त शांतनु शर्मा को शिकायत भेजकर मामले में तत्काल हस्तक्षेप की मांग की थी

हरिभूमि न्यूज ⏭सिरसा

शहर के वार्ड नंबर 20 और 21 के विभिन्न क्षेत्रों में पेयजल के साथ कथित रूप से सीवरेज युक्त दूषित पानी आने की शिकायत के बाद जनस्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग हरकत में आ गया है।

विभागीय अधिकारियों ने शनिवार को प्रभावित क्षेत्रों का दौरा कर स्थिति का जायजा लिया तथा दूषित पानी आने के कारणों का पता लगाने के लिए पेयजल और सीवर लाइनों की जांच शुरू करवाई। उल्लेखनीय है कि वार्डवासियों ने इस संबंध में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी और उपायुक्त शांतनु शर्मा को शिकायत भेजकर मामले में तत्काल हस्तक्षेप की मांग की थी। शिकायत में कहा गया था कि रानियां बाजार, सूरतगढिया बाजार, अरोड़ा सुनारों वाली गली, चांदनी चौक, नोहरिया बाजार सहित आसपास की गलियों में गुरुवार शाम से पेयजल के साथ गंदा एवं दुर्गंधयुक्त पानी आने की शिकायत सामने आ रही है।



सिरसा। वार्ड 20 व 21 में सप्लाई किया जा रहा दूषित पानी।

अधिकारी पहुंचे प्रभावित क्षेत्रों में

शिकायत के बाद जनस्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग के कार्यकारी अभियंता राजेश शर्मा, एसडीई दीपक कुमार और जेई अश्विनी कुमार वार्ड नंबर 21 पहुंचे। अधिकारियों ने प्रभावित क्षेत्रों का निरीक्षण किया और स्थानीय स्तर पर स्थिति की जानकारी ली। विभाग की ओर से पेयजल में दूषित पानी मिलने के संभावित स्रोत का पता लगाने के लिए टीमों को पेयजल तथा सीवर लाइनों की जांच में लगाया गया है। वार्डवासियों ने कहा कि मामला सीधे तौर पर लोगों के स्वास्थ्य से जुड़ा हुआ है, इसलिए विभाग को प्राथमिकता के आधार पर दूषित पानी के स्रोत का पता लगाकर समस्या का स्थायी समाधान करवाना चाहिए। उन्होंने कहा कि जब तक पेयजल आपूर्ति पूरी तरह सुरक्षित और सामान्य नहीं हो जाती, तब तक प्रभावित क्षेत्रों के लोगों के लिए स्वच्छ एवं सुरक्षित पेयजल की वैकल्पिक व्यवस्था भी सुनिश्चित की जानी चाहिए। उन्होंने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, उपायुक्त शांतनु शर्मा तथा जनस्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों से मांग की कि मामले की गंभीरता को देखते हुए जांच और मरम्मत कार्य जल्द पूरा करवाया जाए, ताकि वार्ड नंबर 20 और 21 के लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हो सके।



सिरसा। कर्मचारियों को संबोधित करती एसोसिएशन की जिलाध्यक्ष लक्ष्मी देवी।

ऑनलाइन तबादला नीति के विरोध में मुख्यमंत्री आवास पर प्रदर्शन आज

हरिभूमि न्यूज ⏭सिरसा

बहुउद्देशीय स्वास्थ्य कर्मचारी एसोसिएशन हरियाणा स्वास्थ्य विभाग में लागू की जा रही मॉडल ऑनलाइन ट्रांसफर पॉलिसी के पूर्ण विरोध में 25 अक्टूबर को मुख्यमंत्री आवास पर रोष प्रदर्शन करेगा एवं ज्ञापन सौंपते हुए एमपीएचडब्ल्यू वर्ग को प्रक्रिया से बाहर रखने हेतु अपील करेगा। एसोसिएशन सिरसा जिला अध्यक्ष लक्ष्मी देवी व महासचिव राजेश सिंधु ने बताया कि बहु उद्देशीय स्वास्थ्य कर्मचारी ऐसोसिएशन हरियाणा ने सरकार को दूसरा स्मरण पत्र भेजते हुए स्पष्ट किया है कि एमपीएचडब्ल्यू (महिला एवं पुरुष) तथा एमपीएचएस (महिला एवं पुरुष) वर्ग को इस पॉलिसी से पूरी तरह बाहर रखा जाए तथा रेशनलाइजेशन के नाम पर स्वास्थ्य विभाग में पद समाप्त करने की प्रक्रिया पर रोक लगाई जाए। तय कार्यक्रम अनुसार प्रदेश भर से हजारों कर्मचारी मुख्यमंत्री आवास की ओर कूच करेंगे।

स्वास्थ्य कर्मचारियों की भूमिका महत्त्वपूर्ण

उन्होंने कहा कि बहुउद्देशीय स्वास्थ्य कर्मचारी ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में घर-घर जाकर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करते हैं। राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों के क्रियान्वयन, बीमारियों की रोकथाम, स्वास्थ्य जागरूकता और आमजन तक सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं का लाभ पहुंचाने में ऐसे में इस वर्ग की कार्यप्रणाली और जनसेवाओं की प्रकृति को नजरअंदाज करके सामान्य तबादला नीति लागू करना कर्मचारियों के साथ-साथ जनस्वास्थ्य सेवाओं को भी प्रभावित कर सकता है।

छात्र प्रतिनिधिमंडल ने भाजपा नेताओं से की मुलाकात, सौंपा ज्ञापन

यूजीसी पीएचडी रेगुलेशन 2022 लागू करवाने की मांग

हरिभूमि न्यूज ⏭सिरसा

उदय संस्था का एक प्रतिनिधिमंडल भाजपा जिला प्रभारी एवं हरको बैंक के चेयरमैन भारत भूषण जूयाल व भाजपा जिला अध्यक्ष यतिंदर सिंह से मुलाकात कर चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय में यूजीसी पीएचडी रेगुलेशन, 2022 लागू करवाने की मांग उठाई। संस्था के अध्यक्ष मांगे राम तथा सचिव डॉ. रेखा रानी ने कहा कि सिरसा की बेटियों के भविष्य से समझौता नहीं किया जा सकता।

उन्होंने कहा कि उच्च शिक्षा और शोध के अवसर विद्यार्थियों के भविष्य से जुड़े हैं। इसके बारे में संज्ञान लेना विश्वविद्यालय प्रशासन की जिम्मेदारी है। यदि योग्य शिक्षकों को नियमानुसार के रूप में मान्यता देने की प्रक्रिया शुरू नहीं होती, तो इसका असर शोधार्थियों के शैक्षणिक भविष्य पर पड़ेगा। डॉ. रेखा रानी ने कहा, सिरसा जिले की बेटियां और युवा भी उच्च शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र में आगे बढऩे का सपना देखते हैं। उन्हें अवसर मिलना चाहिए।



सिरसा। भाजपा जिला प्रभारी भारत भूषण जुआल को मांग पत्र सौंपते संस्था के पदाधिकारी।

विश्वविद्यालय प्रशासन को यूजीसी पीएचडी रेगुलेशन, 2022 के प्रावधानों के अनुरूप मामले पर गंभीरता से विचार करते हुए नियमानुसार और समयबद्ध कार्रवाई करनी चाहिए। इस रेगुलेशन को लागू करवाने बारे 2024 से विभिन्न संगठनों के द्वारा मांग उठाई जा चुकी है किंतु विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा अभी तक कोई समाधान नहीं किया गया है। यूजीसी के इस नियम को हरियाणा की अन्य यूनिवर्सिटी एमडीयू रोहतक, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र पूरी तरह से लागू कर चुकी है।

शोधार्थियों को उचित अवसर मिले : मांगेराम

अध्यक्ष मांगे राम ने कहा कि संगठन इस मांग को पहले भी कई बार उठा चुका है। विश्वविद्यालय में 10-12 विभाग ऐसे है जहां पीएचडी करवाने के लिए नियमित प्रोफेसर नहीं है और यदि है तो वो रिटायरमेंट के नजदीक है, जिसके चलते वो पीएचडी की सीट नहीं निकल सकते। ऐसे में विद्यार्थियों के लिए संबंधित विभाग में पीएचडी करने के रस्ते बंद हो जाते है। उन्होंने मांग की कि निर्धारित पात्रता पूरी करने वाले संबद्ध महाविद्यालयों के शिक्षकों को पीएचडी शोध निदेशक के रूप में मान्यता देने की प्रक्रिया नियमानुसार शुरू की जाए, ताकि शोधार्थियों विशेष रूप से छात्राओं को अन्य राज्यों के विश्वविद्यालय का रुख न करना पड़े और उनको शोध कार्य के लिए उचित अवसर मिल सकें। प्रतिनिधिमंडल ने भाजपा नेताओं से आग्रह किया कि वे इस विषय को संबंधित अधिकारियों एवं विश्वविद्यालय प्रशासन के समक्ष उठाकर आवश्यक हस्तक्षेप करें। संगठन का कहना है कि शिक्षा में समान अवसर सुनिश्चित करना और विद्यार्थियों के शैक्षणिक हितों की रक्षा करना उसकी प्राथमिकता है। इस मौके पर संगठन के सीडीएलयू अध्यक्ष कबीर सिंह, सचिव जसकरन कौर, संयुक्त सचिव हिमांशु प्रजापत, मीडिया कोऑर्डिनेटर अभिषेक गहलोत तथा सिया, कल्पना, मिंकु, रमन सहित अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे।

मुख्य समन्वयक डॉ. संदीप कुमार ने संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका और महत्व पर प्रकाश डाला

राजकीय महिला महाविद्यालय में मनाया संयुक्त राष्ट्र दिवस

हरिभूमि न्यूज ⏭सिरसा

राजकीय महिला महाविद्यालय में संयुक्त राष्ट्र दिवस के उपलक्ष्य में अंतर-कक्षा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के सहायक प्रोफेसर एवं मुख्य समन्वयक डॉ. संदीप कुमार ने संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका और महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने आधुनिक विश्व में संयुक्त राष्ट्र की प्रासंगिकता को स्पष्ट करते हुए बताया कि विभिन्न देशों के बीच सहयोग स्थापित करने, अंतरराष्ट्रीय विवादों के शांतिपूर्ण समाधान, मानवाधिकारों की रक्षा तथा वैश्विक समस्याओं के समाधान की दिशा में यह संस्था महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

ऐसे विषयों पर विद्यार्थियों की भागीदारी उन्हें विश्व राजनीति और अंतरराष्ट्रीय संबंधों को समझने का अवसर प्रदान करती है। प्रतियोगिता के परिणामों में बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्रा सुमन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी कक्षा की आशा द्वितीय स्थान पर रहीं, जबकि प्रिया ने तृतीय स्थान हासिल किया। विजेता छात्राओं की उपलब्धि ने अन्य प्रतिभागियों को भी शैक्षणिक एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया।



सिरसा। प्रतियोगिता के विजेताओं को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

विभाग के इस प्रयास की प्राचार्य ने सराहना की

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शत्रुजीत सिंह ने राजनीति विज्ञान विभाग के इस प्रयास की सराहना की। छात्राओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि भाषण प्रतियोगिताएँ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इनके माध्यम से विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ता है, सामान्य ज्ञान का विस्तार होता है तथा वे विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और अंतरराष्ट्रीय विषयों पर अपने विचार स्पष्टता के साथ प्रस्तुत करना सीखते हैं। उन्होंने छात्राओं को भविष्य में भी इस प्रकार की शैक्षणिक एवं बौद्धिक गतिविधियों में बढ़-चढकर भाग लेने के लिए प्रेरित किया। संयुक्त राष्ट्र दिवस के अवसर पर आयोजित यह कार्यक्रम छात्राओं को वैश्विक परिदृश्य, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और विश्व शांति जैसे महत्वपूर्ण विषयों से जोडने की दिशा में एक सार्थक पहल रहा।

सॉफ्टवेयर डेवलपर का कार्य वास्तविक समस्याओं का समाधान करना : शैलेन्द्र

सिरसा। चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय सिरसा के यूनिवर्सिटी स्कूल फॉर ग्रेजुएट स्टडीज के कंप्यूटर विज्ञान विभाग द्वारा 'द डेवलपर्स जर्नी: फ्रॉम राइटिंग कोड्स टू सॉल्विंग प्रॉब्लम्स' विषय पर विस्तार व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम में टाटा वन एमजी, गुरुग्राम के सीनियर सॉफ्टवेयर डेवलपर शैलेन्द्र कुमार मुख्य वक्ता रहे। मुख्य वक्ता शैलेन्द्र कुमार ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि एक सफल सॉफ्टवेयर डेवलपर का कार्य केवल कोड लिखने तक सीमित नहीं है, बल्कि वास्तविक समस्याओं को समझना, उनका विश्लेषण करना और प्रभावी समाधान विकसित करना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट की व्यावहारिक प्रक्रिया, कोड की गुणवत्ता, त्रुटियों की पहचान, एल्गोरिदम के उपयोग तथा उद्योग की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप तकनीकी कौशल विकसित करने पर प्रकाश डाला। उन्होंने विद्यार्थियों को तार्किक सोच, रचनात्मकता, टीमवर्क और प्रभावी संचार क्षमता विकसित करने के लिए प्रेरित किया। प्रो. मोहम्मद काशिफ किदवई ने कहा कि कंप्यूटर एप्लिकेशन और डेटा साइंस के क्षेत्र में प्रोग्रामिंग, डेटा विश्लेषण, ऑटोमेशन तथा समस्या समाधान की विशेष महत्ता है। उन्होंने विद्यार्थियों से ऐसे व्याख्यानों का लाभ उठाकर अपने सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक कौशल में बदलने का आह्वान किया। उन्होंने भविष्य में भी इस प्रकार के उपयोगी कार्यक्रम आयोजित करने की प्रतिबद्धता जताई।



मीट मार्केट की जगह निर्धारित करने को लेकर उपायुक्त को सौंपा ज्ञापन

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

शहर में जगह-जगह पर खुली मीट की दुकानों से शाकाहारी लोगों को आ रही समस्याओ को लेकर बाबा श्याम वेलफेयर सोसायटी ने डीसी विवेक भारती को ज्ञापन सौंपकर इन्हें एक जगह स्थानांतरित करने की मांग की है। संस्था के अध्यक्ष विजय सहारण, प्रवीण बिश्नोई, सचिन बिश्नोई, वरूण आदि ने बताया की शहर के मुख्य बाजारों में जीवों को काटकर उनका मांस बेचा जा रहा है। जोकि पशु क्रूरता अधिनियम के खिलाफ है। किसी भी जीव का वध पशु चिकित्सक की निगरानी में उसकी जांच होकर होना चाहिए। वहीं हर जगह खुली दुकानों से दुर्गन्ध फैली होने से शाकाहारी लोगों को समस्या आ रही है। जब कई जगहों पर दुकानदार गली में वध के बाद बचे अवशेषों को गली में फैंक देते हैं जिससे गन्दगी फैल रही है। संस्था ने डीसी से निवेदन कर इन दुकानों को शहर से बाहर करने की मांग की है। अगर जल्दी ही इस समस्या पर प्रशासन ध्यान नहीं देता है तो संस्था द्वारा जिला स्तर पर बडा. आंदोलन भी किया जाएगा। डीसी विवेक भारती ने भी संस्था के सदस्यों को इस मामले में प्रभावी कदम उठाने का आश्वासन दिया है।



फतेहाबाद। डीसी को ज्ञापन सौंपते सोसायटी के सदस्य।

विद्यार्थियों ने भाखड़ा बांध और माता नैना देवी व काली धार का शैक्षणिक किया दौरा

ओढां। चौ. देवी लाल स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी पन्नीवाला मोटा के छात्रों ने भाखड़ा बांध, नांगल का एक शैक्षिक दौरा आयोजित किया गया था। इसके अलावा छात्र भाखड़ा बांध के आस-पास के स्थानों पर भी गए। इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग के अंतिम वर्ष और दूसरे वर्ष के छात्रों ने देश के अत्यंत प्रतिष्ठित संस्थान, भाखड़ा बांध का दौरा किया। इस दौरान विद्यार्थियों ने भाखड़ा बांध की शिक्षा के साथ-साथ माता नैना देवी, माता चिंतपूर्णी, माता ज्वालाजी शक्तिपीठ, काली धार, श्री आनंदपुर साहिब गुरुद्वारा का भी दौरा किया। नांगल में बांध के दौरे के दौरान, छात्रों ने भाखड़ा बांध और गंगुवाल पावर हाउस को देखा। उन्होंने हाइड्रो बांध परियोजना और देश के लिए बिजली उत्पादन की प्रक्रिया को करीब से समझा। साथ ही उन्होंने वहां बांध के काम में इस्तेमाल होने वाले अत्याधुनिक उपकरणों और मशीनों को भी देखा। इस दौरे के दौरान इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग के गेस्ट फैकल्टी संजय डूडी और प्रोग्रामर श्रुति आर्या छात्रों के साथ थे।

संस्थान के निदेशक-प्रिंसिपल डॉ. जगदीश कुमार ने इस टूर को अपनी शुभकामनाएं दीं। उन्होंने छात्रों को अनुशासित रहने और सीखने के प्रति तत्पर रहने के लिए प्रेरित किया, साथ ही उनसे टूर के दौरान बेहतरीन आचरण करने को कहा ताकि संस्थान का नाम रौशन हो सके। इस टूर की योजना और आयोजन इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग के प्रमुख पुनीत चावला और गेस्ट फैकल्टी रूबी सथियाला द्वारा किया गया।



खेलकूद

विद्यार्थियों ने विभिन्न दौड़, कूद और थ्रो स्पर्धाओं में शानदार प्रदर्शन किया

राजकीय कॉलेज भूना की खेलकूद प्रतियोगिता संपन्न, श्रवण और कमल बने बेस्ट एथलीट

हरिभूमि न्यूज ⏭भूना

राजकीय महाविद्यालय भूना में आयोजित दो दिवसीय 8वीं वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का शनिवार को समापन हो गया। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने विभिन्न दौड़, कूद और थ्रो स्पर्धाओं में शानदार प्रदर्शन किया। पुरुष वर्ग में श्रवण और महिला वर्ग में कमल को बेस्ट एथलीट घोषित किया गया। समापन समारोह में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. सुरेंद्र कुमार ज्यानी ने विजेता खिलाडिय़ों को सम्मानित किया। प्रतियोगिता का आयोजन खेलकूद गतिविधि संयोजक प्रो. गुरपिंदर के संयोजन में किया गया। इस दौरान खिलाडिय़ों ने अपनी खेल प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए विभिन्न स्पर्धाओं में पदक हासिल किए।





भूना। राजकीय कॉलेज भूना की खेलकूद प्रतियोगिता में ऊंची कूद में भाग लेती महिला खिलाड़ी एवं बेस्ट एथलीट श्रवण और कमल को सम्मानित करते प्राचार्य।

पुरुष वर्ग में श्रवण व महिला वर्ग में छोटी देवी ने मारी बाजी

पुरुष वर्ग की 100 मीटर दौड़ में सुमित प्रथम, हर्ष दहिया द्वितीय और विजयजीत तृतीय रहे। 400, 800 और 5000 मीटर दौड़ में श्रवण ने प्रथम स्थान हासिल किया। इन तीनों स्पर्धाओं में संदीप दूसरे स्थान पर रहे। लंबी और ऊंची कूद में प्रवेश कुमार ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। गोला फेंक में सुमित सावरन, चक्का फेंक में मुकेश कुमार और भाला फेंक में कपिल ने बाजी मारी। महिला वर्ग में छोटी देवी का दौड़ स्पर्धाओं में दबदबा रहा। उन्होंने 100, 400 और 800 मीटर दौड़ में प्रथम स्थान हासिल किया। लंबी कूद में कमल, ऊंची कूद में मुस्कान, गोला फेंक में नेहा, चक्का फेंक में प्रीति और भाला फेंक में सुजाता प्रथम रहीं।

खेलों से होता है शारीरिक और मानसिक विकास

समापन समारोह में प्राचार्य डॉ. सुरेंद्र कुमार ज्यानी ने कहा कि खेल शिक्षा का अभिन्न अंग हैं। खेलों से विद्यार्थियों का शारीरिक और मानसिक विकास होता है तथा उनमें अनुशासन, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और सहयोग की भावना विकसित होती है। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रतिदिन कम से कम एक घंटा खेलकूद और योग के लिए निकालने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि नियमित व्यायाम स्वस्थ जीवनशैली के साथ पढ़ाई में एकाग्रता बढ़ाने में भी सहायक है। इस अवसर पर डॉ. छोटू राम, प्रो. सुनील कम्बोज, प्रो. अमनदीप सिंह, डॉ. रामनाथ, प्रो. भरत, डॉ. रीना, प्रो. आरती सहित महाविद्यालय का समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

28 को जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय के समक्ष गरजेंगे प्राथमिक शिक्षक

हरिभूमि न्यूज ⏭सिरसा

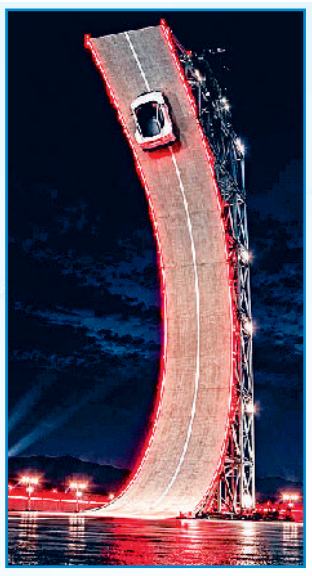
- आज तक मांगों के समाधान की दिशा में कोई संतोषजनक प्रगति नहीं आई है सामने

राजकीय प्राथमिक शिक्षक संघ ने लंबित मांगों पर बार-बार मांगपत्र सौंपने के बावजूद कोई ठोस कार्रवाई नहीं होने पर गहरा रोष व्यक्त किया है। संगठन ने घोषणा की है कि इन मांगों के समाधान की मांग को लेकर 28 अक्टूबर को जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय के समक्ष धरना-प्रदर्शन किया जाएगा। जिला प्रधान विजय शर्मा ने बताया कि संगठन द्वारा 9 जुलाई तथा 24 अगस्त 2026 को प्राथमिक शिक्षकों की विभिन्न समस्याओं को लेकर जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी को मांगपत्र सौंपे गए थे। इसके बाद 10 सितंबर 2026 एवं 17 सितम्बर 2026 को भी पत्र के माध्यम से मांगों पर शीघ्र कार्रवाई करने का अनुरोध किया गया। जिला प्रधान ने कहा कि संगठन का उद्देश्य शिक्षकों की जायज समस्याओं का समाधान करवाना है, लेकिन कई बार मांगपत्र सौंपने और पर्याप्त समय दिए जाने के बावजूद कार्रवाई नहीं होना शिक्षकों में निराशा पैदा कर रहा है। उन्होंने बताया कि मंगलवार को संबंधित अधिकारी से बातचीत के दौरान भी मांगों के समाधान को लेकर कोई स्पष्ट आश्वासन नहीं मिला। संगठन का आरोप है कि बातचीत से समस्याओं टालमटोल की स्थिति महसूस हुई। साथ ही संगठन द्वारा उनकी नीयत पर सवाल उठाए जाने पर संगठन को बरगलाने की कोशिश भी की गई।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, 783, पी.एल.ए., नजदीक टाउन पार्क, हिसार
फोन : 8295154800, 9315429403, 9253681005

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
P-1
रोहतक,रविवार 25 अक्टूबर 2026

इन दिनों हर तरफ एलन मस्क की टेस्ला रोडस्टर कार को लेकर रॉकेट तकनीक और उड़ने की क्षमताओं से जुड़ी चर्चाएं हो रही हैं। रोडस्टर की प्रस्तावित उत्पादन समय सीमा 2028 बताई गई है। उड़ती हुई कारें निश्चित रूप से भविष्य के परिवहन का एक हिस्सा बन सकती हैं। लेकिन अभी इसे हकीकत बनने में कई सवालों और चुनौतियों का सामना करना होगा।





क्या सच होने वाला है उड़ती कार का सपना !

{ कवर स्टोरी / लोकमित्र गौतम }

उड़ती हुई कारों का सपना अब केवल विज्ञान कथाओं, हॉलीवुड फिल्मों और भविष्य की कल्पनाओं तक सीमित नहीं है। गुजरे 15 अक्टूबर 2026 को टेक्सास में टेस्ला की ऐसी ही उड़न कार नई रोडस्टर के प्रदर्शन ने इस अनुमान को और मजबूत किया है। एलन मस्क की टेस्ला के अलावा भी दुनिया की कई कंपनियां ऐसी कारों के विकास में काफी हद तक सफल हो चुकी हैं या इसके नजदीक पहुंच चुकी हैं, जो सड़क पर कार की तरह चलने के बजाय हवा में उड़ सकेंगी। कहीं इन्हें फ्लाइंग कार कहा जा रहा है, कहीं इलेक्ट्रिक वर्टिकल टेकऑफ एंड लैंडिंग यानी ईवीटीओएल और कहीं एयर टैक्सी। लेकिन एक बुनियादी सवाल अब भी रह-रहकर जेहन में आ रहा है कि क्या हम सचमुच उड़ती हुई कारों के युग की दहलीज पर खड़े हैं या तकनीक की चमक ने भविष्य की तस्वीर को वास्तविकता से कहीं ज्यादा आकर्षक बना दिया है? इस बात को समझना होगा कि सड़क पर चलने वाली कार, रॉकेट से जुड़ा प्रदर्शन और यात्रियों को लेकर उड़ने वाला प्रमाणित विमान- तीनों अलग-अलग चीजें हैं। भविष्य की परिवहन क्रांति को समझने के लिए इस अंतर को ध्यान में रखना जरूरी है।



कई देशों में बन रही ईवीटीओएल



नीदरलैंड में निर्मित पाल-वी लिबर्टी कार

आसान नहीं सपने का सच होना

बीते 15 अक्टूबर 2026 को एलन मस्क ने स्पेसएक्स की तकनीक से जुड़े थ्रस्टरों की मदद से अमेरिका के टेक्सास में अपनी बहुचर्चित और बहुप्रतीक्षित टेस्ला की नई रोडस्टर कार को एक घुमावदार रैंप से हवा में उछलते, पलटते और जमीन पर उतरते दिखाया और अपनी सपनीली उड़न कार को लेकर असाधारण दावे भी किए हैं। इसके बाद से उड़न कार की चर्चाएं एक बार फिर से सुर्खियों में आ गई हैं। लेकिन उड़ान के जानकारों के मुताबिक इस प्रदर्शन को सामान्य अर्थों में उड़ने वाली कार का प्रमाण नहीं माना जा सकता। कुछ क्षण हवा में उछलना और नियंत्रित उड़ान भरकर यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाना बिल्कुल अलग बात है। हालांकि इस घटना का महत्व फिर भी कम नहीं है। इसने एक बार फिर दिखाया कि सड़क परिवहन और एयरोस्पेस तकनीक के बीच की दूरी घटाने की महत्वाकांक्षा कितनी बड़ी हो चुकी है। मगर भविष्य की असली परीक्षा रोमांचक प्रदर्शन नहीं बल्कि सुरक्षा, उपयोगिता, लागत और नियामकीय मंजूरी होगी। साथ ही इसकी जोर-शोर से हो रही तैयारियों के बीच यह सवाल भी वाजिब है कि क्या हर कार को उड़ने की जरूरत होगी?

वास्तविकता को समझना होगा

फ्लाइंग कार से जुड़े सवालों का जवाब समझने के लिए पहले इसकी दो अलग अवधारणाओं को समझना होगा। पहली यह कि ऐसी कार, जो सड़क पर भी चल सके और जरूरत पड़ने पर उड़ भी सके। दूसरी है इलेक्ट्रिक एयर टैक्सी, जो सड़क पर चलने वाली कार नहीं बल्कि छोटी उड़ने वाली कार या मशीन है। इसे ही आमतौर पर ईवीटीओएल कहा जाता है यानी टैक्सी के रूप में एक विमान, जो बिजली से उड़ता हो और हेलीकॉप्टर की तरह सीधे ऊपर उठ सके और नीचे उतर सकता हो।

यह दूसरी अवधारणा फिलहाल ज्यादा व्यावहारिक दिखाई देती है। शहरों के बीच हर व्यक्ति की निजी उड़ने वाली कार की तुलना में हवाई अड्डे से शहर के केंद्र तक तेज परिवहन, महानगरों में सीमित दूरी की हवाई टैक्सी और आपातकालीन चिकित्सा सेवाएं पहले उपयोगी साबित हो सकती हैं। इससे जमीन पर मौजूद सड़क नेटवर्क को हटाने के बजाय उसके ऊपर एक नया परिवहन विकल्प तैयार होगा। हमें यह समझना होगा कि महानगरों में यातायात की समस्या केवल सड़कों की कमी नहीं है। आबादी का घनत्व, गलत शहरी नियोजन, पार्किंग, सार्वजनिक परिवहन की अपर्याप्तता और यात्रा की बढ़ती मांग भी इसके कारण हैं। ऐसे में उड़ती हुई कारों को हर समस्या का समाधान मानना जल्दबाजी होगी। कल्पना करें दिल्ली, मुंबई या बंगलुरु में हजारों निजी उड़ने वाली कारें एक साथ आसमान में उतर आएं, तब सवाल होगा कि उन्हें उड़ने की अनुमति कौन देगा, उनके लिए हवाई गलियारे कैसे निर्धारित होंगे, दुर्घटना की स्थिति में जिम्मेदारी किसकी होगी और वे कहां उतरेंगी? यदि हर इमारत की छत पर लैंडिंग की व्यवस्था करनी पड़े, तो शहरी ढांचे को पूरी तरह बदलना होगा। इसके अलावा, बैटरी की क्षमता, उड़ान की दूरी, मौसम का प्रभाव, शोर, रखरखाव और यात्रियों की सुरक्षा भी बड़ी चुनौतियां हैं। कम दूरी की इलेक्ट्रिक उड़ान संभव बनाने वाली तकनीक अपने आप में यह गारंटी नहीं देती कि वह हर मौसम में सुरक्षित और किफायती सेवा दे सकेगी।



अमरिका में बनी जॉबी एविएशन का एस4

खत्म नहीं होंगे पारंपरिक वाहन

उड़न कारों के बारे में सोचते हुए एक यह सवाल भी जेहन में आता है कि क्या उड़ने वाली कारों के आने के बाद रेल, मेट्रो, बसें और सामान्य कारें अप्रासंगिक हो जाएंगी? इसकी संभावना बिल्कुल नहीं है, क्योंकि इतिहास गवाह है कि परिवहन के इतिहास में नए साधन पुराने साधनों को पूरी तरह समाप्त नहीं करते बल्कि उनकी भूमिका बदलते हैं। विमान आने के बाद रेल खत्म नहीं हुई, मेट्रो के विस्तार से बसों की जरूरत समाप्त नहीं हुई। उसी तरह उड़ने वाली कारें भी पहले उन यात्राओं में जगह बना सकती हैं, जहां समय की कीमत अधिक है और यात्रियों की संख्या सीमित है। मेट्रो और रेल बड़ी संख्या में यात्रियों को कम ऊर्जा और कम जगह में ले जाने में सक्षम हैं। बसें स्थानीय संपर्क प्रदान करती हैं, जबकि निजी कारें घर से गंतव्य तक लचीली यात्रा का विकल्प देती हैं।

भविष्य में ऐसा हो सकता है

एक यात्री घर से इलेक्ट्रिक कार में मेट्रो स्टेशन तक पहुंचे, लंबी दूरी ट्रेन से तय करें और अंतिम चरण में हवाई टैक्सी का इस्तेमाल करे, ऐसी एकीकृत व्यवस्था अधिक यथार्थवादी है। इस तरह उड़ती हुई कारों का भविष्य केवल इस बात से तय नहीं होगा कि कोई वाहन हवा में उठ सकता है या नहीं। असली प्रश्न यह होगा कि क्या वह आम आदमी की जरूरतों के अनुकूल सुरक्षित, विश्वसनीय, किफायती और पर्यावरण की दृष्टि से बेहतर विकल्प बन सकता है। हालांकि, उस भविष्य में सबसे महत्वपूर्ण वाहन शायद वह नहीं होगा जो सबसे ऊंचा उड़ता है बल्कि वह होगा जो लोगों को सबसे सुरक्षित, सुलभ और कम खर्च में उनकी मंजिल तक पहुंचाता है। *

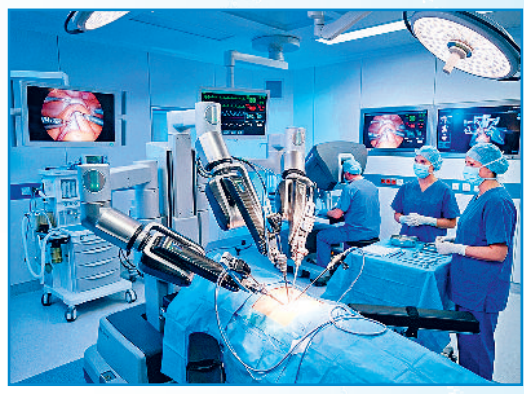


कई देशों में हो रहे प्रयास

भले आज अमेरिका, चीन, जापान, जर्मनी, ब्रिटेन और नीदरलैंड सहित कई देशों में अलग-अलग तरह के उड़ने वाले वाहन विकसित हो रहे हों। अमेरिका में जॉबी एविएशन का एस4 और आर्चर एविएशन का मिडनाइट जैसे विमान हवाई टैक्सी के लिए तैयार किए जा रहे हैं। चीन की ईहैंग अपने ईएच216-एस जैसे बिना पायलट वाले यात्री विमान के कारण उल्लेखनीय बढ़त रखती है। जापान की स्काईड्राइव और चीन की एक्सपेंग एरॉएचटी सड़क और आसमान के बीच संबंध बनाने वाली अलग अवधारणाओं पर काम कर रही हैं। मगर यहां एक महत्वपूर्ण अंतर है। तकनीकी प्रोटोटाइप उड़ाना, विमान का नियामकीय प्रमाणन प्राप्त करना और नियमित व्यावसायिक यात्री सेवा शुरू करना तीन अलग-अलग पड़ाव हैं। चीन का ईएच216-एस प्रमाणन और सीमित सेवाओं के मामले में आगे है, जबकि अमेरिका में जॉबी जैसे खिलाड़ी पायलट वाले विमानों के प्रमाणन की दिशा में तेजी से बढ़ रहे हैं। इसलिए किसी एक देश को सभी तरह की उड़ने वाली कारों का निर्विवाद विजेता कहना अभी सही नहीं होगा।

अब रोबोट करेंगे सर्जरी !

अभी तक इंसानी डॉक्टर की मदद से रोबोटिक सर्जरी हुआ करती थी। लेकिन अब इंसानी डॉक्टर से दूर रहकर रोबोटिक सर्जरी को अंजाम देने की दिशा में कदम आगे बढ़ गए हैं। यह देखना दिलचस्प होगा, आने वाले समय में मेडिकल साइंस में रोबोट की भूमिका और कितनी बढ़ती है?



{ टेक्नोट्रीटमेंट / वीरेंद्र बहादुर सिंह }

मेडिकल क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और रोबोटिक्स का इस्तेमाल तेजी से बढ़ रहा है। आज भारत में भी घुटने और कूल्हे के जॉइंट रिप्लेसमेंट से लेकर कई तरह की छोटी-बड़ी सर्जरी रोबोटिक तकनीक की मदद से की जाने लगी हैं। हालांकि इन ऑपरेशनों में रोबोट अपने आप सर्जरी नहीं करता। अनुभवी और कुशल डॉक्टर ऑपरेशन थिएटर में मौजूद रहते हैं और रोबोटिक उपकरणों की मदद से पूरी प्रक्रिया को नियंत्रित करते हैं। लेकिन अमेरिका में हाल ही में हुए एक प्रयोग ने भविष्य की मेडिकल सर्जरी की संभावनाओं को एक कदम और आगे बढ़ा दिया है।

दो ह्यूमनॉइड रोबोट ने की सर्जरी: अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया में एक ऐसा प्रयोग किया गया, जिसमें दो ह्यूमनॉइड रोबोट ने एक जीवित मरीज पर सर्जरी की। इस दौरान गॉल-ब्लैडर यानी पित्ताशय को शरीर से अलग किया गया। ऑपरेशन में चीरा लगाना, लिवर से पित्ताशय को अलग करना और अंत में टांके लगाने जैसी प्रक्रियाएं रोबोट ने पूरी कीं।

यह दावा सुनने में बेहद रोमांचक है कि रोबोट ने स्वयं ऑपरेशन कर दिया, लेकिन इस प्रयोग की वास्तविकता को समझना जरूरी है। पहली बात यह कि मरीज इंसान नहीं, बल्कि एक पशु था। दूसरी और सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि प्रशिक्षित मानव डॉक्टर पूरी प्रक्रिया के दौरान मौजूद थे। वे ऑपरेशन थिएटर से दूर बैठकर टेली ऑपरेशन तकनीक के माध्यम से रोबोट को नियंत्रित कर रहे थे। फिर भी मेडिकल साइंस के लिए यह प्रयोग बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसका उद्देश्य यह पता लगाना था कि क्या भविष्य में ह्यूमनॉइड रोबोट डॉक्टर की प्रत्यक्ष मौजूदगी के बिना भी जटिल सर्जरी कर सकते हैं?

नॉर्मल रोबोट ने किया ऑपरेशन: इस प्रयोग की एक और खासियत थी। इसके लिए कोई विशेष सर्जिकल रोबोट तैयार नहीं किया गया था। इसके बजाय दो नॉर्मल ह्यूमनॉइड रोबोट का इस्तेमाल किया गया। इन रोबोट में कई तरह के जोड़ थे और उनके हाथों में अंगूठे तथा अंगुलियों जैसी कार्यक्षमता थी। इसलिए वे अपने हाथों में अलग-अलग सर्जिकल उपकरण पकड़कर उनका इस्तेमाल कर सकते थे। इनमें श्रीडी लाइडार और डेप्थ कैमरा जैसी तकनीक भी लगी थी। इससे रोबोट अपने सामने मौजूद वस्तुओं की स्थिति और गहराई को समझ सकते थे। यही क्षमता सर्जरी जैसे अत्यंत संवेदनशील काम में महत्वपूर्ण हो जाती है। यह प्रयोग इस बात का संकेत है कि भविष्य की सर्जरी में केवल रोबोटिक मशीनें ही नहीं, बल्कि एआई, कंप्यूटर विजन और रोबोटिक्स का संयुक्त इस्तेमाल निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

भारत में हो चुका है ऐसा प्रयोग: रोबोटिक सर्जरी की यह कहानी भारत के लिए पूरी तरह नई नहीं है। करीब आठ वर्ष पहले गुजरात में ऐसा प्रयोग हो चुका है, जिसमें डॉक्टर ने मरीज से कई किलोमीटर दूर बैठकर टेलीरोबोटिक तकनीक से सफलतापूर्वक हृदय की सर्जिकल प्रक्रिया की थी।

पद्मश्री से सम्मानित हृदय रोग विशेषज्ञ डा. तेजस पटेल ने 2018 में अहमदाबाद स्थित अस्पताल में भर्ती एक महिला मरीज के हृदय की प्रक्रिया को दूर बैठकर नियंत्रित किया था। उस समय डॉक्टर स्वयं अस्पताल से लगभग 30-32 किलोमीटर दूर गांधीनगर में थे। मरीज को कुछ दिन पहले ही हृदयाघात हुआ था। इसके बावजूद उसने दुनिया में इस तरह की पहली प्रक्रियाओं में से एक के लिए सहमति दी। यह प्रयोग इसलिए ऐतिहासिक था क्योंकि डॉक्टर और मरीज के बीच कई किलोमीटर की दूरी होने के बावजूद रोबोटिक सिस्टम और हाईस्पीड इंटरनेट की मदद से डॉक्टर मरीज की प्रक्रिया को नियंत्रित कर सके।



कैसे होती है टेलीरोबोटिक सर्जरी: इस तरह की रोबोटिक प्रणाली मुख्य रूप से तीन हिस्सों में काम करती है। पहला हिस्सा अस्पताल के ऑपरेशन थिएटर में मौजूद रोबोटिक आर्म होता है, जो कैथलैब जैसी व्यवस्था के साथ जुड़ा रहता है और मरीज के शरीर में वास्तविक प्रक्रिया करता है। दूसरे हिस्से में एक बदली जा सकने वाली कैसेट होती है। इसमें प्रक्रिया के लिए जरूरी क्लिनिकल सामग्री और उपकरण व्यवस्थित रहते हैं। तीसरा हिस्सा डॉक्टर के लिए बनी कॉकपिट जैसी व्यवस्था होती है। डॉक्टर इसमें बैठकर गेमिंग के जॉयस्टिक जैसे नियंत्रण उपकरणों की मदद से रोबोटिक आर्म को संचालित करता है।

सबसे खास बात यह है कि यह कॉकपिट, ऑपरेशन थिएटर से काफी दूर भी हो सकती है।

सवाल भी है बरकरार: रोबोटिक सर्जरी को लेकर अकसर यह सवाल उठता है कि क्या भविष्य में रोबोट, डॉक्टरों की जगह ले लेंगे? फिलहाल ऐसा कहना जल्दबाजी होगी। सर्जरी केवल हाथों की सटीक गतिविधियों का नाम नहीं है। मरीज की स्थिति को समझना, अचानक पैदा होने वाली जटिलताओं का आकलन करना, निर्णय लेना और किसी अप्रत्याशित परिस्थिति में तुरंत रणनीति बदलना, इन सबमें मानवीय विशेषज्ञता महत्वपूर्ण है।

लेकिन तस्वीर का दूसरा पहलू भी उतना ही दिलचस्प है। अगर एआई रोबोट को देखने, समझने और निर्णय लेने की क्षमता में लगातार बेहतर बनाता है और रोबोटिक तकनीक हाथों की अत्यंत सूक्ष्म गतिविधियों को अधिक सटीक बनाती है, तो डॉक्टर और रोबोट का यह गठजोड़ चिकित्सा क्षेत्र को पूरी तरह बदल सकता है। *



{ दोहे / केदार शर्मा }

पूर्ण चंद्रमा शरद का

दीप्त रजत-सी ओढ़नी, उजली पाखी रात।
पूर्ण चंद्र से शरद ऋतु, हंस-हंस करती बात।।
चटक चमक चक चांदनी, चंचल चित चकोर।
होले-होले हवा हंस, हुलराती हर ओर।।
षोडस अंशों युक्त है, मादकमय मुस्कान।
सम्मोहनमय मौन में, डूबा सकल जहान।।
कानन उपवन दमकते, नहा चांदनी संग।
नदी सरोवर बदलते, धवल वसन सम रंग।।
क्षीरसिंधु सुत क्षीर-सा, शीतलता सब ओर।
मंद-मंद मुस्कान में, मिला मधुर मन-मोर।।
पूर्ण चंद्रमा शरद का, बदले सब हालात।
कुदरत जैसे बांटती, कोई नई सौगात।।
पर्वों की आहट हुई, सर्दी की पदचाप।
उधर गुलाबी ठंड भी, बदन रही है नाप।।
बदली-बदली सी फिजां, बदल रहे हालात।
दिन की घड़ियां भी घटीं, और फैलती रात।।



{ पुस्तक अंश / सूर्यबाला }

कई प्रतिष्ठित सम्मानों से विभूषित वरिष्ठ साहित्यकार सूर्यबाला की आत्मकथात्मक संस्मरणों की पुस्तक 'डिप सा'ब की तीसरी बेटी' हाल में प्रकाशित होकर आई है। अपनी स्मृति की वीथियों से गुजरते हुए उन्होंने बहुत साधारण सी लगने वाली घटनाओं में व्याप्त असाधारण सौंदर्य और विमर्श को व्यक्त किया है। आज उनके जन्मदिन के अवसर पर प्रस्तुत है, इसी पुस्तक का एक संपादित अंश।

युवती वधुओं से एक गुहार

मनोविज्ञान कभी मेरा विषय नहीं रहा लेकिन मेरी 'मेरा विद्रोह', 'सुनंदा छोकरी की डायरी', 'सांझवाती' और 'निर्वासित' जैसी कहानियां पढ़कर लोग अकसर प्रश्न करते हैं, 'आप बच्चों और बूढ़ों के मनों को कैसे इतनी बारीकी से पढ़ पाती हैं?...तो मैं ही नहीं शायद हर रचनाकार जन्मजात मनोविज्ञानी होता है। यह मनोविज्ञान लेखन ही नहीं, जीवन में भी आई परिस्थितियों और चरित्रों से निर्वाह कर ले जाने की तरकीबें निकाल सकता है। मैंने इसी की मदद से श्वसुरालय के ग्राम्यांचल से जुड़े लोगों की मन, प्रकृति और समझ बांच ली थी। ये बेशक पुरानी और रीति-रिवाजों की लकीर पीटने वाले गलत परंपराओं, अंधविश्वासों को भी सही समझने वाले लोग हैं लेकिन मन के कुटिल नहीं। ये ऊपर से अड़ियल हैं, रूढ़ परंपराओं से अलग होने का उनमें भय व्यापता हैं, और वे असुरक्षित महसूस करते हैं लेकिन अंदर से सीधे, भोले और अपनेपन की अकूत मिल्कियत के मालिक हैं। उन्होंने जीवन में सदा अपना-पराया, तेरा-मेरा अलगा-गुजारी और थोड़ी-थोड़ी चीजों पर लड़ना, अड़ना ही देखा होता है। एक-दूसरे के खिलाफ अपने पतियों को भड़काती स्त्रियां, प्रायः हर विवाहित पुत्र, रात-दिन मां से पत्नी के विरुद्ध और पत्नी से उसकी मां के खिलाफ शिकायतों की अनवरत और अंधाधुंध कलह कोलाहल भरी शिकायतें सुनते-सुनते खब्त हो गया होता है। मुझे लेकर भी इस मां की, इस परिवार की कुछ वैसी ही रूढ़ धारणाएं बनी होंगी उसे संभालने में, उनकी धारणा बदलने में समय तो लगना ही था।

विश्व की प्रकृति प्रदत्त दुर्भाग्यपूर्ण विडंबनाओं में एक है, सास-बहू की परस्पर तनातनी वास्तव में यह एक ही 'पुरुष' पर अपना एकनिष्ठ वर्चस्व चाहने वाली उसके जीवन की दो अतिप्रिय स्त्रियों के क्लेश हैं क्योंकि वह दोनों का प्रिय है दोनों स्त्रियां उस पर अपना पूरा आधिपत्य चाहती हैं। पहली ने जिस बच्चे को जन्म दिया, शिशुपन से उसके सारे दुःख-सुख की साक्षी रही, एक ही रात में उस मां को एक-दूसरी युवती स्त्री द्वारा उसके पद से अपदस्थ कर दिया जाता है। (अनजाने ही सही) लेकिन बचपन से युवा होने तक जिसकी नींद सोयी, जिसकी नींद उठी, ऐसी मां और बेटे के निकटतम रक्त-संबंध के बावजूद, यह अपदस्थ मां, अपने 'दोनों बच्चों' (पुत्र-पुत्रवधु) से एक समझदार, सम्मानजनक व्यवहार, रिश्ता और निश्छल प्यार पा कर अति प्रसन्न और तृप्त भी हो सकती है, यह कोई युवती बहू शायद ही समझती हो। कम से कम प्रयोग के तौर पर ही, नाममात्र को ही, यदि वह पहले की तरह उस मां को घर की सम्राज्ञी, उसके बेटे की 'वही मां' बनी रहने का 'भरम' बनाये रख सके तो सीधे-सीधे सिर्फ भारत ही नहीं, विश्व की एक बड़ी मनोवैज्ञानिक समस्या छूमंतर हो सकती है। लेकिन इतना तक भी धैर्य कहां हो पाता है। न हमारी युवती वधुओं में! न परिपक्ववय वाली मां में ही प्रायः खलनायिकत्व अपनाने से बाज न आती वधुरानी को भी सीधे-सीधे, संपूर्ण प्रभुत्व, पर्याप्त स्पेस और स्वछंद स्वतंत्रता चाहिए होती है। तो लुटी-पिटी, हारी-खिसियानी हजार पूर्वाग्रहों से ग्रस्त, मां जो तमाम गलत धारणाओं की शिकार पहले से ही होती हैं, उनकी धारणा का रंग पक्का होता जाता है। मैंने इन्हीं दो गहरी खाइयों के बीच सेतुबंध का एक प्रयोग सा किया था जो सफल रहा और पूरे कुटुंब में तीन पीढ़ियों तक जीवन और संबंधों की समरसता कायम रही। सच तो यह है कि परिवार और रिश्तों से जुड़ी स्थितियों को सिर्फ 'घरेलू' मानकर न मुंह बिचकाया जा सकता है, न उन्हें टरकाया जा सकता है। थोड़े-बहुत उलटफेर के साथ कॉर्पोरेट और कारोबारी संस्थानों में जटिल रिलेशनशिप को साधने में काम आने वाली तरकीबों और फॉर्मूलों से ही इस मसले को भी हल किया जा सकता है। शर्त सिर्फ एक, इसे घरेलू समझ कर हल्के से न लिया जाए। *



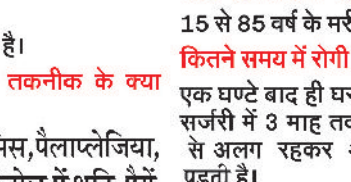
(वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक 'डिप सा'ब की तीसरी बेटी' से साभार)

विज्ञापन...

इंजेक्शन की नवीन तकनीक से स्पाइन रोगों का उपचार

नोट : वरिष्ठ नागरिकों (60 वर्ष के ऊपर) का उपचार मात्र 12 हजार रुपए में

सर्जरी के बिना ही सिर्फ इंजेक्शन तकनीक के जरिये स्पाइन (रीढ़) रोगों का बेहतर और विश्वसनीय उपचार ग्वालियर में हो रहा है इस तकनीक के असाधारण लाभ-



केन्द्रीय मंत्री श्रीमंत ज्योतिरादित्य सिंधिया जी से स्पाइन के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए डॉ. प्रमोद पहारिया अवार्ड प्राप्त करते हुए।

स्टेनोसिस, स्पॉन्डिलाइटिस आदि में कारगर है।

जो रोगी ऑपरेशन करवा चुके हैं उसमें भी यह कारगर है ?

यदि ऑपरेशन के बाद दबाव बना रहता या दोबारा दबाव आ जाता है तो उसमें भी यह तकनीकी कारगर है।

इस ट्रीटमेंट की कितनी बार आवश्यकता होती है?
सिर्फ एक ही बार पर्याप्त है।

सर्जरी की अपेक्षा इस तकनीक के क्या फायदे हैं?
सर्जरी के बाद पैरालिसिस, पैलाप्लेजिया, ब्लैडर एंव बोवेल के कंट्रोल में क्षति, पैरों में कमजोरी, इंफेक्शन, इंप्लाट फैलियर जैसे कॉम्पिलकेशन इसमें नही है।

किन मरीजों का इलाज इस तकनीक से संभव है?
डिस्क प्रोलेप्स जैसे L4-L5, L5-S1, साइटिका, लंबर या सर्वाइकल रेडीक्युलोपैथी, डिजरनेरेटिव डिस्क, फैसिट जॉइन्ट सिंड्रोम, माइलोपैथी, लंबर कैनाल

किस उम्र के लिये यह चिकित्सा है?
15 से 85 वर्ष के मरीजों के लिये।

कितने समय में रोगी घर जा सकता है?
एक घण्टे बाद ही घर जा सकता है। जबकि सर्जरी में 3 माह तक रोगी को अपने काम से अलग रहकर आर्थिक क्षति उठाना पड़ती है।

इस ट्रीटमेंट की सफलता की दर कितनी है?
90 से 95% सफल है।

इस ट्रीटमेंट का असर कब तक रहता है?
इसमें जड़ से इलाज होता है।

क्या यह स्टेरॉइड इंजेक्शन है?
नहीं, यह एक भ्रम है। यह एक सेफ अमेरिकन प्रोसीजर है, जो एक विशेष मशीन की निगरानी में किया जाता है।

NBC@

डॉ. प्रमोद पहारिया
स्पाइन सर्जन
MBBS, D.Ortho, DNB, M.Ch. (Ortho)
पूर्व सर्जन- सर गंगाराम हॉस्पिटल एवं इंडियन स्पाइनल इंज्यूरी सेन्टर, नई दिल्ली

ओल्ड श्री टॉकीज, बारादरी, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)
समय: दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक
व्हाट्सएप पर रिपोर्ट भेजकर ही संपर्क करें
सम्पर्क – 7354858466



चित्तौड़गढ़ मीरा महोत्सव-2026

शौर्य की फिजा में महकती भक्ति

इतिहास में राजपूताना वीरगाथाओं से समृद्ध प्रदेश राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में आज और कल आयोजित हो रहे मीरा महोत्सव में भक्ति की बयार की अनुभूति आप कर सकते हैं। यह महोत्सव न केवल राजस्थान के इतिहास बल्कि वहां की कला, संगीत, संस्कृति से रूबरू होने का अवसर भी प्रदान करती है। इस महोत्सव की विशिष्टताओं पर एक नजर।

सांस्कृतिक आयोजन
वीना गौतम

कुछ जगहें ऐसी होती हैं, जहां घूमने का अर्थ केवल खूबसूरत इमारतों को देखना, तस्वीरें खींचना और रास्ते में स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लेना भर नहीं होता। वहां की मिट्टी, हवा और पत्थर भी कोई कहानी सुनाते हैं। राजस्थान का चित्तौड़गढ़ ऐसी ही जगह है। यहां दुर्ग की ऊंची प्राचीरें शौर्य और बलिदान की गाथाएं कहती हैं, विजय स्तंभ इतिहास की विराटता का अहसास कराता है और इन्हीं ऐतिहासिक दीवारों के बीच स्थित मीरा मंदिर प्रेम, समर्पण और आत्मिक स्वतंत्रता की एक बिल्कुल अलग दुनिया में ले जाता है। आज 25 और कल 26 अक्टूबर 2026 को आयोजित हो रहा मीरा महोत्सव ऐसा ही एक खास अवसर है।

संगीत-परंपरा की अनुभूति : राजस्थान पर्यटन के अनुसार इस दो दिवसीय आयोजन में मीरा की भक्ति, कविता, संगीत और राजस्थान की लोकपरंपराओं को केंद्र में रखा जाएगा। ऐसे में यह सफर केवल एक ऐतिहासिक शहर की सैर नहीं बल्कि उस प्रेम स्वरूपा महाभक्त मीरा को समझने का अवसर भी है, जिसने राजमहलों की मर्यादाओं के बीच अपने मन की स्वतंत्रता और कृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति को चुना।

बहती है मीरा की भक्ति धारा: चित्तौड़गढ़ का नाम आते ही रानी पद्मिनी, महाराणा कुंभा, महाराणा सांगा और राजपूताना के शौर्य की स्मृतियां सामने आ जाती हैं। लेकिन इस शहर की सांस्कृतिक पहचान का एक दूसरा पक्ष भी है, जो तलवार की चमक से नहीं, वीणा की धुन और भक्ति के स्वर से उजागर होता है। मीरा इसी पक्ष की प्रतिनिधि हैं। सोलहवीं सदी की भक्त-कवयित्री मीराबाई का जीवन कृष्ण के प्रति उनकी अनन्य आस्था और सामाजिक रूढ़ियों से टकराने के लिए याद किया जाता है। उनके पदों में प्रेम है, विरह है, प्रतीक्षा है और अपने आराध्य के प्रति ऐसा समर्पण है, जो किसी एक काल या क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा। उनकी कविता मंदिरों से निकलकर लोकगीतों, शास्त्रीय संगीत, भजन मंडलियों और आम लोगों की स्मृतियों में पहुंची। मीरा महोत्सव के दौरान भक्ति संगीत, काव्य और लोककलाओं के कार्यक्रम इस विरासत को नए सिरे से महसूस करने का अवसर देंगे।



पद्मिनी महल से गौमुख कुंड

ऐतिहासिक मीरा दुर्ग का दीदार: चित्तौड़गढ़ की यात्रा का सबसे प्रभावशाली पड़ाव है इसका विशाल दुर्ग। लगभग 180 मीटर ऊंची पहाड़ी पर स्थित यह ऐतिहासिक परिसर दूर से ही अपने विस्तार और भव्यता से आकर्षित करता है। इसकी लंबी चढ़ाई, प्रवेशद्वार और भीतर फैले स्मारक, आगंतुकों को धीरे-धीरे उस दौर में ले जाते हैं, जब मेवाड़ की राजनीतिक और सांस्कृतिक पहचान इसी दुर्ग से आकार लेती थी। इसकी प्राचीरों पर खड़े होकर आस-पास के भू-भाग को देखना अपने आपमें एक अनुभव है। यहां इतिहास किसी बंद संग्रहालय में रखी वस्तु की तरह नहीं बल्कि खुले आकाश के नीचे फैले परिदृश्य की तरह सामने आता है। समय ने कई इमारतों को क्षतिग्रस्त किया, लेकिन उनके अवशेष आज भी सत्ता, संघर्ष, कला और स्मृति की परतें खोलते हैं। विजय स्तंभ इसकी पहचान का प्रमुख हिस्सा है। इसकी बारीकियों को देखते हुए समझ आता है कि मध्यकालीन भारत में स्मारक केवल विजय का प्रतीक नहीं बल्कि शिल्पकला और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के माध्यम भी थे।

आकर्षक मीरा मंदिर: इसी दुर्ग के भीतर मीरा मंदिर पहुंचकर यात्रा का स्वर बदल जाता है। यहां राजसी वैभव और युद्धों की



मीरा मंदिर

स्मृतियों के बीच भक्ति की एक शांत दुनिया दिखाई देती है। मंदिर की स्थापत्य शैली, नक्काशी और परिसर का वातावरण पर्यटकों को कुछ देर ठहरने के लिए बाध्य करता है। यहां पहुंचकर मीरा के पदों को याद करना इस यात्रा को और अर्थपूर्ण बना सकता है। उनके काव्य में कृष्ण केवल आराध्य नहीं, बल्कि आत्मीय संवाद के साथी हैं। मीरा का प्रेम किसी सांसारिक उपलब्धि की आकांक्षा नहीं रखता, वह अपने विश्वास के साथ जीने की स्वतंत्रता का भी प्रतीक है। यही कारण है कि सदियों बाद भी उनकी कविता अलग-अलग भाषाओं और पीढ़ियों के लोगों को छूती है। मीरा मंदिर में कुछ समय शांत बैठकर आसपास के स्थापत्य को देखकर कल्पना कर सकते हैं कि कैसे किसी कवयित्री की निजी अनुभूति धीरे-धीरे सामूहिक सांस्कृतिक विरासत बन जाती है। पर्यटन का असली आनंद शायद इसी बिंदु पर मिलता है, जब कोई जगह केवल देखने की वस्तु नहीं रहती, बल्कि भीतर कुछ बदलने का अवसर बन जाती है।

ये स्थल भी हैं दर्शनीय: जब आप मीरा महोत्सव में शामिल होने के लिए चित्तौड़गढ़ जाएं तो यहां स्थित कई और स्थलों को देख सकते हैं। रानी पद्मिनी का महल, राणा कुंभा का महल, गौमुख कुंड और कालिका माता मंदिर जैसे स्थल, इतिहास तथा स्थापत्य के अलग-अलग रूप सामने लाते हैं। पद्मिनी महल का परिसर और उसके आस-पास का जलाशय दुर्ग के दृश्यात्मक आकर्षण को बढ़ाते हैं, जबकि राणा कुंभा का महल, मेवाड़ की राजसी विरासत को समझने का अवसर देता है। गौमुख कुंड पर पहुंचकर कुछ देर ठहरना अविस्मरणीय अनुभव हो सकता है। चट्टान से निकलकर कुंड में पहुंचते जलस्रोत का दृश्य प्रकृति और आस्था के पुराने संबंध की याद दिलाता है। दुर्ग के भीतर जैन मंदिर भी हैं, जिनकी बारीक नक्काशी और स्थापत्य विविधता इस क्षेत्र की बहुधार्मिक सांस्कृतिक विरासत का परिचय देती है। *

इसे भी करें एंज्वॉय

चित्तौड़गढ़ की यात्रा में राजस्थानी खान-पान का स्वाद भी शामिल होना चाहिए। दाल-बाटी-चूरमा, गट्टे की सब्जी और स्थानीय शैली में तैयार पारंपरिक व्यंजन भोजन को यात्रा का यादगार हिस्सा बना सकते हैं। स्थानीय बाजारों में हस्तशिल्प, पारंपरिक कपड़े और क्षेत्रीय कलाकृतियां देखी, खरीदी जा सकती हैं।

बेहतर और सफल जीवन जीने के लिए सबको बदलने के बजाय खुद को समझिए और जरूरी बदलाव कीजिए। इससे आप मनचाही सफलता तो पाएंगे ही, जीवन में सार्थकता भी आएगी।

दुनिया को नहीं खुद को बदलिए

सेल्फ मोटिवेशन
शिखर चंद जैन



अधिकतर लोग अकसर इसलिए परेशान रहते हैं कि ये दुनिया वैसी क्यों नहीं है, जैसी वे चाहते हैं? सच कहा जाए तो उनकी परेशानी का मूल ही यही सोच है। सुकून, समृद्धि और सफलता के लिए असल में जरूरत होती है खुद को बदलने की।

व्यर्थ न करें मानसिक ऊर्जा: दूसरों को बदलने की कोशिश में अपनी ऊर्जा बर्बाद मत कीजिए। हमारे तनाव का बड़ा हिस्सा अकसर उन चीजों से आता है, जो हमारे नियंत्रण में हैं ही नहीं। कोई हमारे बारे में क्या सोचता है, किसने हमें फोन नहीं किया, किसी ने हमारी बात क्यों नहीं मानी या किसी ने हमारे साथ वैसा व्यवहार क्यों नहीं किया जैसा हम चाहते थे? इन सवालों में मानसिक ऊर्जा खपती है। 'लेट देम' थ्योरी इसी प्रवृत्ति से बाहर निकलने का एक सरल तरीका है। किसी के व्यवहार से परेशान हों तो तुरंत प्रतिक्रिया देने के बजाय खुद से पूछें, 'क्या यह मेरे नियंत्रण में है?' यदि जवाब 'नहीं' है तो अपनी ऊर्जा बचाइए।

समझें समय का सही उपयोग: समय बचाने से पहले यह तय कीजिए कि समय किसके लिए चाहिए? आज समय प्रबंधन पर हजारों तकनीकें उपलब्ध हैं, लेकिन हमारी टू-डू लिस्ट फिर भी खत्म नहीं होती। याद रखिए, हमारे पास हर काम करने के लिए अनंत समय नहीं है, इसलिए हर अवसर स्वीकार करना और हर काम पूरा करना संभव नहीं। इसका सीधा अर्थ है, प्राथमिकताएं तय करनी होंगी। जिस काम के लिए समय नहीं है, उसे 'नहीं' कहना भी समय प्रबंधन है।



लोगों की परवाह छोड़िए: 'लोग क्या कहेंगे' जैसे डायलॉग को जिंदगी का कंट्रोलर मत बनने दीजिए। समाज की राय जरूरी हो सकती है, लेकिन यदि हर निर्णय इसी डर से लिया जाए कि दूसरे क्या सोचेंगे तो धीरे-धीरे अपनी पसंद, पहचान और इच्छा दबने लगती है। आपका काम, आदतें, स्वभाव हर व्यक्ति को पसंद आना संभव भी नहीं, जरूरी भी नहीं। यदि हर टिप्पणी आपके फैसले बदलने लगे तो जीवन आपका होकर भी आपका नहीं रहेगा। दूसरों का सम्मान कीजिए, पर अपनी जिंदगी का नियंत्रण उनके हाथ में मत दीजिए।

दिमाग पर हावी न हो मोबाइल: आधुनिक जीवन की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि जो उपकरण हमें दुनिया से जोड़ने के लिए बना था, वही हमारा ध्यान सबसे ज्यादा भंग कर रहा है। हर कुछ मिनट में फोन देखना, रील बदलना, नोटिफिकेशन जांचना और बिना उद्देश्य स्क्रॉल करना एक आदत सी बन गई है। समाधान तकनीक को त्यागना नहीं, बल्कि उसकी सीमा तय करना है। सुबह उठते ही फोन न देखना, भोजन के समय उसे दूर रखना और सोने से पहले कुछ समय स्क्रीन-मुक्त रखना छोटे लेकिन प्रभावी कदम हो सकते हैं। डिजिटल अनुशासन आज की नई जीवनशैली का अनिवार्य हिस्सा है।

रिश्तों में बातचीत जरूरी: हमारी कई पारिवारिक और व्यक्तिगत समस्याएं वास्तविक घटना से ज्यादा उसके बारे में बनाए गए अनुमान से पैदा होती हैं। किसी ने देर से जवाब दिया तो हमने मान लिया कि वह नाराज है। किसी ने कम बात की तो मान लिया कि रिश्ता खराब हो गया। इसके बजाय सीधे संवाद करना बेहतर है। आरोप लगाने के बजाय सवाल पूछिए, प्रतिक्रिया देने से पहले सामने वाले की बात सुनिए। रिश्तों में हर बात पर सहमत होना जरूरी नहीं, लेकिन असहमति के बीच सम्मान बचा रहना जरूरी है। अच्छा रिश्ता वह नहीं, जिसमें कभी झगड़ा न हो, अच्छा रिश्ता वह है, जिसमें झगड़े के बाद बातचीत का दरवाजा बंद न हो।

मुझसे नहीं होगा सोचना ठीक नहीं: कई क्षमताएं अभ्यास और सीखने से विकसित हो सकती हैं। उम्र, पिछली असफलता या पुरानी पहचान को भविष्य की अंतिम सीमा मान लेना जरूरी नहीं। जिसने कभी मंच पर भाषण नहीं दिया, वह अभ्यास से वक्ता बन सकता है। जिसने कभी नहीं लिखा, वह लिखना सीख सकता है। जिसने तकनीक से दूरी बनाई है, वह धीरे-धीरे डिजिटल कौशल हासिल कर सकता है।

व्यस्त नहीं एकाग्र रहें: एक साथ कई काम करने की हमारी आदत वास्तव में कई बार सारे कामों की गुणवत्ता कम कर देती है। लगातार आने वाले संदेश, ई-मेल और नोटिफिकेशन दिमाग को एक काम से दूसरे काम की ओर खींचते रहते हैं। इसलिए रोज कुछ समय एक महत्वपूर्ण काम के लिए बिना व्यवधान के निर्धारित करना उपयोगी है। तीस मिनट के कंसंट्रेशन टास्क से शुरुआत कीजिए। मोबाइल दूर रखिए, अनावश्यक नोटिफिकेशन बंद कीजिए। *

प्रिकॉशन
शैलेंद्र सिंह

इन दिनों यंगस्टर्स में ईयरफोन से म्यूजिक सुनने की हैबिट बहुत तेजी से बढ़ रही है। लेकिन असावधानी बरतने पर इससे सुनने की क्षमता प्रभावित हो सकती है। विश्व श्रवण दिवस (27 अक्टूबर) पर जानिए उपयोगी बातें।

हार्मफुल हो सकती है ईयरफोन की दीवानगी





बस-मेट्रो में सफर करता युवा, अपनी गाड़ी में बैठकर ऑफिस जा रहा प्रोफेशनल हो, सड़क पर पैदल चलता किशोर, जिम में पसीना बहाता यंगस्टर या रात को बिस्तर पर लेटा विद्यार्थी, इन सबके बीच इन दिनों जो हैबिट तेजी से पॉपुलर हुई है, वह है- कानों में ईयरफोन लगाए रहना। म्यूजिक, पॉडकॉस्ट, वीडियो और ऑनलाइन बातचीत की दुनिया अब इतनी निजी हो गई है कि आस-पास की आवाजें कई बार हमारे लिए गैर जरूरी हो जाती हैं। लेकिन इस निजी दुनिया का एक खतरा भी है। जिस पर हम अकसर तब तक ध्यान नहीं देते, जब तक सुनाई देने वाली आवाजें धीमी नहीं पड़ने लगतीं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की चेतावनी: डब्ल्यूएचओ के मुताबिक दुनिया भर में 12 से 35 वर्ष के 1 अरब से ज्यादा युवाओं को मनोरंजन के दौरान तेज आवाज के असुरक्षित संपर्क के कारण सुनने की क्षमता प्रभावित होने का खतरा रहता है। इसमें व्यक्तिगत ऑडियो, उपकरणों पर तेज आवाज में संगीत सुनना और मनोरंजन स्थलों पर अधिक शोर शामिल है।

स्मार्टफोन और म्यूजिक: पहले संगीत सुनने के लिए हम रेडियो, टेप रिकॉर्डर या म्यूजिक सिस्टम का सहारा लेते थे। लेकिन अब कुछ सेकेंड में ही हम अपने मनपसंद गाने सुन सकते हैं। यह सुविधा उपलब्ध कराई है, हमारी जेब में मौजूद रहने वाले स्मार्टफोन ने। यात्रा के दौरान, पढ़ाई करते समय, व्यायाम के वक्त और कई बार सोने से पहले तक हमारे विशेषकर युवाओं के कानों में ईयरफोन लगे रहते हैं। जिन कोशिकाओं की मदद से ध्वनि के संकेत हमारे मस्तिष्क तक पहुंचते हैं, वे कोशिकाएं लगातार डिजिटल संगीत के संपर्क में रहने के कारण क्षतिग्रस्त होने लगती है। इससे सुनने की क्षमता प्रभावित होने लगती है।

खतरा केवल तीव्रता में नहीं: जोखिम तय करने में तीन बातें अहम है- आवाज कितनी तेज है, वह कितनी देर तक सुनी जा रही है और ऐसा कितनी बार होता है। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक श्रवण संबंधी सुरक्षित दिशा-निर्देशों के तहत औसतन 80 डेसिबल की ध्वनि के संपर्क में एक सप्ताह में 40 घंटे तक रहने से वयस्कों के लिए संदर्भित सुरक्षित सीमा मानी जाती है। यदि आवाज का स्तर 90 डेसिबल हो जाए, तो यह अवधि घटकर सप्ताह में केवल 4 घंटे रह जाती है। इसका मतलब है कि यांत्रिक आवाज थोड़ी भी बढ़ जाए तो कान की सुरक्षा प्रणाली असुरक्षित हो जाती है।

संगीत सुनिए लेकिन: संगीत जरूर सुनिए, लेकिन संगीत हमेशा सुनने की शक्ति बचाकर सुनिए। आवाज कम रखिए, चार-चार घंटे तक लगातार संगीत ही नहीं किसी भी वॉयस को सुनने से बचिए। हर आधे या एक घंटे बाद कानों को आराम दीजिए। आखिरकार संगीत जिंदगी को खूबसूरत बनाने का जरिया है, लेकिन इससे अपनी जिंदगी में सुनने की शक्ति को खत्म करके बदसूरत न बनाएं। *



'कभी खुशी कभी गम' का 'बोले चूड़ियां' गीत दृश्य



फिल्म 'बागबान' का इमोशनल सीन



'हम दिल दे चुके सनम' का 'चांद छुपा' गीत दृश्य

सिने ट्रेंड
मनोज प्रकाश

हिंदी फिल्मों में दांपत्य प्रेम को अलग-अलग तरह से प्रस्तुत किया जाता रहा है। कई ऐसे गीत रचे गए हैं, जो आज भी करवा चौथ जैसे पर्व पर जरूर गाए-गुनगुनाए जाते हैं। ऐसी ही कुछ फिल्मों और दांपत्य प्रेम पर केंद्रित गीतों पर एक नजर।

फिल्मी गीतों में खूब दमकता रहा है दांपत्य प्रेम

पारिवारिक, धार्मिक ही नहीं हर तरह की हिंदी फिल्मों में पति-पत्नी के रिश्ते को बहुत महत्व दिया जाता रहा है। खासतौर पर दांपत्य जीवन खुशहाल बनाने के लिए पत्नी के द्वारा किए जाने वाले त्याग और समर्पण को भी फिल्मों में अलग-अलग नजरिए से फिल्माया जाता रहा है। पत्नी के द्वारा अपने सुहाग यानी पति के लिए व्रत की बात आती है तो बॉलीवुड में इस पर भी केंद्रित कुछ फिल्मी दृश्य और एक से बढ़कर सुंदर गीत रचे गए हैं।

यादगार हैं ये गीत: पति-पत्नी के प्रेम को समर्पित करवा चौथ के गीतों की बात करें तो 65 वर्ष पहले बनी फिल्म 'बहू-बेटी' का एक गीत सबसे पहले याद आता है। माला सिन्हा, अशोक कुमार, जॉय मुखर्जी और मुमताज स्टारर इस फिल्म में आशा भोंसले के गाए गीत 'आज है करवा चौथ सखी री, मांग ले सुख दान' को आज भी याद किया जाता है। इसमें करवा चौथ के पर्व को जिस तरह से उत्सव जैसा दिखाया गया, वह बाद की फिल्मों के लिए नजीर बना। इसके बाद भी कुछ फिल्मों में करवा चौथ से जुड़े गीत या कहानी पर आधारित दृश्यों ने पति के प्रति पत्नी के प्रेम, निष्ठा, समर्पण, त्याग और सम्मान को प्रभावी तरीके से पेश किया जाता रहा है।

वर्ष 1969 में रिलीज हुई फिल्म 'सुहागरात' का गीत 'गंगा मैया में जब तक पानी रहे, मेरे सजना तेरी जिंदगानी रहे', भी दांपत्य प्रेम को बहुत खूबसूरती से प्रकट करता है। इसी तरह वर्ष 1973 में रिलीज हुई फिल्म 'सौदागर' में फूल बानो (पद्मा खन्ना) अपने पति मोती (अमिताभ बच्चन) के लिए जब 'सजना है मुझे सजना के लिए...' गाती हैं तो एक सजी-धजी पत्नी का चेहरा सामने आ जाता है, जो अपने पति को खुशी देने के लिए सजती-संवरती है। भले इसे करवा चौथ से सीधा जोड़ा नहीं जाए पर यह हर करवा चौथ पर उन गीतों में शामिल होता है, जो इस दिन जरूर गाए-गुनगुनाए जाते हैं।

कुछ इसी तरह का एक गाना फिल्म 'गीत गाता चल' का है, जो 51 वर्ष पहले आई थी। 'मैं वही, दर्पण वही, न जाने ये क्या हो गया कि सब कुछ लागे नया-नया..' में सारिका-सचिन की जोड़ी एकदम से भारतीयता में रची-बसी नजर आती है। पूरी तरह लगता है कि दांपत्य प्रेम को समर्पित है यह गीत।

ये फिल्में भी हैं यादगार: करवा चौथ को पूरी तरह से समर्पित फिल्म 'करवा चौथ' 1978 में रामलाल हंस ने बनाई थी, जो इस पर्व के लिए पहली फिल्म मानी जाती है। आशीष कुमार, कामिनी कौशल, आद्या, पद्म चव्हाण, रमेश देव और हेलन ने इसमें अभिनय किया था। उषा मंगेशकर के गाए गीत 'करवा चौथ का व्रत ऐसा', इस मूवी का मुख्य गीत था। इसमें हेलन ने अपनी सखियों के साथ पारंपरिक तौर तरीके से करवा चौथ को सेलिब्रेट किया।



'करवाचौथ का व्रत ऐसा' गीत मे हेलन

करवा चौथ पर दांपत्य प्रेम को प्रभावी तरीके से प्रेजेंट करने वाली दो और फिल्मों का जिक्र किया जा सकता है। ये हैं- 'मांग भरो सजना' और 'सुहागरात'। सन 1980 में जब 'मांग भरो सजना' में पति का दो पत्नियों के बीच में संतुलन बनाने का प्रयास करना, उस दौर में महिलाओं के बीच सर्वाधिक चर्चा का विषय बन गया था। रेखा और मौसमी चटर्जी के किरदारों ने इसमें जीतेंद्र के लिए व्रत रखकर पूरे समर्पण के साथ इस गीत के फिल्मांकन को प्रस्तुत किया है। आशा भोसले तथा लता मंगेशकर की आवाज में गाया यह गीत, 'दीपक मेरे सुहाग का जलता रहे...' आज भी करवा चौथ के अवसर पर विवाहित महिलाएं सुनना पसंद करती हैं।

पति के साथ को समर्पित भावुक गीत: फिल्म 'सुहागरात' का गीत, 'गंगा मैया में जब तक पानी रहे, मेरे सजना तेरी जिंदगानी रहे...' पत्नी का पति के प्रति प्रेम की पराकाष्ठा को दिखाता है। उसका मन सूरज-चांद से भी नहीं भर रहा है तो वह पति की जिंदगानी के लिए उससे आगे निकल जाती है। उसे लगता है कि सूरज चांद तो छिप सकते हैं पर मां गंगा कभी नहीं सूखेंगी और वह उससे अपने पति का जीवन जोड़ देती है। दांपत्य प्रेम की पराकाष्ठा व्यक्त करता है यह गीत।

ये गीत-दृश्य भी हैं दांपत्य को समर्पित: नए दौर की फिल्मों में भी कई गीत ऐसे रचे गए, जिन्होंने दर्शकों को करवा चौथ के प्रति संवेदनशील बनाया और इस पर्व की महत्ता को नया मोड़ दिया। इनमें 'दिल वाले दुल्हनिया ले जाएंगे' का 'घर आ जा परदेसी', 'कभी खुशी कभी गम' का 'बोले चूड़ियां', 'हम दिल दे चुके सनम' का 'चांद छुपा बादल में', 'जख्म' का 'गली में आज चांद निकला' के अतिरिक्त भी कई ऐसे गीत हैं, जो भले ही करवा चौथ का आधार नहीं लेते हों पर इस दिन विवाहित महिलाएं गुनगुनाती नजर आती हैं। हां, 'राजा हिंदुस्तानी' का वह सीन भी इस दिन अवश्य याद आता है, जिसमें करिश्मा कपूर अपने पति के लिए निर्जला व्रत रखती है और एक भावनात्तक मोड़ इसका एंड करता है। ठीक वैसे ही जैसे करवा चौथ पर चांद देखने के बाद पति-पत्नी एक-दूसरे को देखते हुए ऐसे लगते हैं जैसे कह रहे हों सात जन्मों का रिश्ता है हमारा। यहां फिल्म 'बागबान' का जिक्र करना भी जरूरी है। इसमें अमिताभ का किरदार, अपनी पत्नी (हेमा मालिनी) के लिए व्रत रखता है। दोनों एक-दूसरे से दूर रहकर भी दांपत्य के अटूट प्रेम बंधन में जुड़े दिखते हैं। *

पर्व / आर. सी. शर्मा

शरद पूर्णिमा चांदनी रात में भक्ति की दिव्यता



भारतीय सनातन परंपरा में पर्व-त्योहार आत्मा को परमात्मा से जोड़ने वाले आध्यात्मिक सोपान भी होते हैं। इन्हीं पावन पर्वों में शरद पूर्णिमा का विशिष्ट स्थान है। आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला यह पर्व प्रकृति की अनुपम छटा, चंद्रमा की धवल चांदनी, श्रीकृष्ण की महारास लीला और मां लक्ष्मी की आराधना के कारण विशेष धार्मिक महत्व रखता है।

महारास की दिव्य रात्रि: शरद पूर्णिमा का सर्वाधिक भावपूर्ण आध्यात्मिक संदर्भ भगवान श्रीकृष्ण की महारास लीला से जुड़ा है। श्रीमद्भागवत महापुराण के दशम स्कंद में वर्णित रासपंचाध्याई भगवान के माधुर्य स्वरूप और गोपियों की अनन्य भक्ति का अद्भुत आख्यान प्रस्तुत करती है। शरद ऋतु की निर्मल रात्रि, यमुना का तट, वृंदावन की कुंज गलियां और मुरली की मधुर तान यह समूचा परिवेश भक्ति साहित्य में दिव्यता के अनुपम बिंब के रूप में प्रतिष्ठित है। भागवत परंपरा में रासलीला को लौकिक प्रेम की सीमाओं से ऊपर उठकर ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण के भाव से देखा जाता है। महारास का आध्यात्मिक मर्म यही है कि जब अहंकार, स्वार्थ और सांसारिक आसक्ति का आवरण हटता है, तब हृदय में अनन्य भक्ति का प्रकाश प्रकट होता है। इस दृष्टि से शरद पूर्णिमा केवल चंद्रदर्शन की रात्रि नहीं बल्कि कृष्णमय चेतना में निमग्न होने का पावन अवसर है। मंदिरों में ठाकुरजी का विशेष श्रृंगार, भजन-कीर्तन और रासलीला के आयोजन इसी भक्तिभाव को साकार करते हैं।

चांदनी में अमृतवर्षा: सनातन धर्म में चंद्रमा को मन का अधिष्ठाता माना गया है। वैदिक एवं पौराणिक परंपराओं में चंद्रदेव की उपासना, सोम की अवधारणा और शीतलता के प्रतीक के रूप में चंद्रमा का विशेष महत्त्व है। शरद पूर्णिमा की रात्रि में आकाश में पूर्ण चंद्रमा अपनी उज्ज्वल आभा बिखेरता है। वर्षा ऋतु के पश्चात निर्मल आकाश और स्वच्छ वातावरण इस प्राकृतिक सौंदर्य को और भी मनोहारी बना देते हैं। लोकमान्यता है कि इस रात्रि चंद्रमा की किरणों से अमृत बरसता है। इसी विश्वास के कारण अनेक घरों में खीर बनाकर खुले आकाश के नीचे चंद्रकिरणों में रखने और अगले दिन उसे प्रसाद रूप में ग्रहण करने की परंपरा प्रचलित है। इस परंपरा में प्रकृति के प्रति कृतज्ञता, पारिवारिक सहभागिता और पवित्र भावना का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

व्रत-पूजन: शरद पूर्णिमा पर श्रद्धालु अपनी पारिवारिक परंपरा और सामर्थ्य के अनुसार व्रत रखते हैं। प्रातः स्नान के उपरांत देवपूजन, इष्टदेव का स्मरण और दान-पुण्य किया जाता है। संध्याकाल में चंद्रदर्शन के पश्चात चंद्रदेव को अर्घ्य अर्पित करने की परंपरा भी अनेक स्थानों पर प्रचलित है। मंदिरों में विशेष भोग, दीपदान, हरिनाम संकीर्तन और धार्मिक प्रवचन आयोजित किए जाते हैं। कहीं श्रीकृष्ण को श्वेत वस्त्रों और पुष्पों से सजाया जाता है, तो कहीं रात्रि में भजन-मंडलियां भक्तिरस का संचार करती हैं। इन समस्त अनुष्ठानों का मूल उद्देश्य अंतःकरण की शुद्धि और ईश्वर के प्रति श्रद्धा का संवर्धन है। *